Chap-3

अध्याय - तीन

आख्यानक कविता का स्वरूप और मिथक प्रयोग ।

मिथ अर्थात् मिथक ।

मिथक की परिभाषा ।

मिथक का अर्थ ।

मिथक का विविध सन्दर्भों में प्रयोग ।

मिथक का स्वरूप ।

मिथक और पुराण ।

आख्यानक कविता का स्वरूप और मिथक प्रयोग :-

विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करने के पश्चात् और उनके तथ्यों को एकत्र करने के बाद मिथ की चार परिभाषाएँ निकलती हैं, जिस पर गम्भीरता से विचार करके कोई ठोस निष्कर्ष निकाला जा सकता है ।

﴾1﴿ प्राकृतिक शक्तियों के विरूद्ध संघर्ष में विजय के प्रति तथा प्राकृतिक, क्रिया-व्यापारों के प्रति जिज्ञासा मूलक अनुभूतियों की, आदि-मानव द्वारा सहज - स्फूर्त, बिम्बात्मक - रूपक मयी, भाषिक - अभिव्यक्ति मिथ है ।

﴾2﴿ आदिम जातीय जीवन के प्रति आदिमानव द्वारा ठोस, यथार्थ तथा मूर्त अनुभूतियों का राग-रंजित, आवेगात्मक, समष्टिपरक, भाषिक निराकरण मिथ है ।

﴾3﴿ वस्तु सत्ता से अधिक कल्पनामयी चेतना के सहारे, संवेदनाजन्य अनुभवों की संबर्धित या संशोधित पुनर्रचना मिथ है ।

﴾4﴿ सामूहिक अवचेतन में स्थित निर्वैयक्तिक सार्वभौमिक, सार्वकालिक भाव - प्रतिमाएँ जो सदैव नवीन क्षेत्रीय रंग-रूप-कथ्य प्राप्त करके प्रतीकों, बिम्बों तथा रूपकों के सहारे मूर्त हो उठती हैं, उनकी कथात्मक अभिव्यक्ति मिथ है ।

इन चार परिभाषाओं से सर्वथा सहमत होना आवश्यक नहीं है, पहली परिभाषा के अन्तर्गत मिथ और काव्य में परस्पर भेदक रेखा नहीं खींची जा सकती, अत: यह परिभाषा सम्पूर्ण नहीं है । ﴾1﴿

द्वितीय परिभाषा के संदर्भ में कहा जा सकता है कि जातीय जीवन में ठोस यथार्थ मूर्त्त के प्रति ही अनुभूतियाँ प्रकट नहीं होती, अनेक ऐसी अनुभूतियाँ हैं, जो अरूप, कोमल तथा अयथार्थ के प्रति हैं, और इन अनुभूतियों ने जातीय जीवन को ठोस, यथार्थ मूर्त्त की अनुभूतियों से भी अधिक जटिलता से जकड़ रखा है । और अपने आप में भी इन कोमल अमूर्त्त अयथार्थ के प्रति अनुभूतियों का विशेष महत्त्व रहता है । आदि-मानव में भी आधुनिक मानव की तरह ही अनिवर्चनीय, अरूप,

---

1. उद्दरण : नयी कविता में मिथक :- डॉ0 राज कुमार - पृ0- 41

निराकार, ईश्वर की सत्ता के प्रति विशेष निष्ठा तथा आस्था रही है । बहुत से मिथ इसी आस्था से सम्बन्धित हैं, किन्तु इन मतों के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद रहा है ।

तृतीय परिभाषा में वैयक्तिकता पर ही भार दिया गया है और इसमें कल्पना स्वप्न को काव्य का सृजन माना गया है, ये बातें काव्य और मिथ के काफी निकट बैठती है, क्यों कि कल्पनाओं में भी वस्तु सत्ता से अधिक संवेदनाजन्य अनुभवों की अमूर्तित, संवर्धित, संशोधित अतिरंजित पुनर्रचना ही होती है । इन तीनों विधाओं में व्यक्ति चेतन और अवचेतन की ही कार्यकारी भूमिका रहती है । इस बात को प्रतीकीकरण की प्रक्रिया कवि में विद्यमान रहती है, जिसे फ्रायड ने व्यक्तिगत स्वप्न ही माना है, किन्तु सामूहिक नहीं संक्षेप में यह परिभाषा भी सर्वमान्य नहीं हो सकती । किन्तु अधिकांश विद्वानों के मतानुसार अव्यक्तिगत काव्य या साहित्य ही मिथ है ।

मिथों में प्राप्त भावमूलकता तथा तर्कहीनता के कारण विकासवादी विचारकों का मत है, कि मिथ उस काल की उपज है, जब मानव जाति में मेधा और तर्कशक्ति का विकास नहीं हुआ था, और वह भावमूलक स्थिति में था । ई0 वी0 टायलर ने ऐसे काल को ही "मिथ" सर्जक युग" की संज्ञा दी है ।

जे0 जी0 फ्रेजर ने मानव-संस्कृति के विकास-क्रम को तीन युगों में बाँटा है । जादू टोने का युग, धर्म का युग, और विज्ञान का युग । इन मिथों का निर्माण जादू के युग में प्रारम्भ हुआ, इन युगों में आदिमानव ने प्रकृति की प्रत्येक वस्तु ﴾सूर्य, चाँद, वर्षा, आँधी, आदि﴿ को मानव की तरह ही सजीव शक्ति मानता था और यह समझता था कि इनका मानवीय क्रियाओं के साथ सीधा सम्बन्ध है । इसी धारणा के वशीभूत होकर आदिमानव ने प्रकृति मानवीकरण करके अपनी चेतना और क्रिया कलाप का आरोप प्राकृतिक घटनाओं के साथ जोड़ते हुए, अन्धविश्वासों को व्यक्त रूप प्रदान किया । और इस युग के आदि-मानव की मानसिकता को फ्रेजर ने दो सैद्धान्तिक अवधाररणाओं में विभक्त किया ।

1. लॉ ऑफ इमिटेशन
2. लॉ ऑफ कन्टेक्ट और कन्टेजियन

........3/-

इस अवधारणा के अन्तर्गत आदि-मानव यह समझता था, कि वह प्रत्येक वस्तु को अपने कार्यों द्वारा वैसा ही करने के लिए प्रेरित कर सकता है । §1§

वृक्षों के पत्तों या डाल कर झुलाकर आँधी को चलने या रूकने के लिए प्रेरित करना आदि टोने इसी अवधारणा के अन्तर्गत आये । "लॉ ऑफ कन्टेक्ट" के अन्तर्गत वह समझता था कि जो वस्तुएँ एक बार आपसी स्पर्श में रही हैं, अलग हो जाने के बाद भी वे परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं, अतः उन्हें परस्पर प्रभावित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है । §2§

फ्रेजर ने आदिम समाजों में दो महत्वपूर्ण संस्थाओं का वर्णन किया है । "मेडिसिन मैन" और प्रीस्टली किंग"। मेडिसिन मैन" अपने कबीले के लोगों को रोगों-व्याधियों से बचाता था, और उसके स्वास्थ्य का ध्यान रखता था । "प्रीस्टली किंग" प्राकृतिक क्रिया-व्यापारों §आँधी,वर्षा,धूप,अकाल,आदि§ पर नियन्त्रण रखकर अपनी प्रजा को धनधान्य दिलाता था, और कबीले की सुख-सुविधाओं तथा स्वास्थ्य की जिम्मेदारी इन्ही संस्थाओं पर थी ।

" प्रीस्टली किंग " और "मेडिसिन मैन" प्रकृति पर नियन्त्रण रखने की असीम शक्ति अर्जित करने के लिए कुछ विशेष क्रियायें करते थे । कुछ कार्य उनके लिए निषिद्ध थे, क्यों कि उन कार्यों को करने से उनकी शक्ति का ह्रास होगा, ऐसा माना जाता था, यही निषिद्ध कार्य आगे चलकर "टैबू" कहलाये ।

" प्रीस्टली किंग " को मानव और देवता §प्राकृतिक शक्तियों§ के बीच की कड़ी ही नहीं बल्कि साक्षात् देवता समझा जाता था । कबीले के सभी सदस्यों के मन में "प्रीस्टली किंग" के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान का भाव होता था, ऐसी मान्यता थी कि "प्रीस्टली किंग" के कार्यकलापों का अनुकरण करने से उसकी शक्ति का ह्रास होता है, इसलिए "प्रीस्टली किंग" के कार्य कलापों को पवित्र तथा कबीले के सदस्यों के लिए निषिद्ध माना जाता था । ये निषिद्ध कार्य पवित्र गोत्र प्रतीक §टोटेम§ कहलाये ।

---

1. दि गोल्डेन बो - ए स्टडी इन मैजिक एन्ड रिलिजन - जे.जी.फ्रेजर -पृ0-14
2. -वही- पृ0- 14

......4/-

जादू युग में इन्हीं अन्धभावनाओं से प्रेरित मिथों का निर्माण हुआ । इन मिथों में प्रकृति और शत्रु पर जादुई क्रियाओं द्वारा नियन्त्रण करने की प्रवृत्ति निहित है । इन मिथों में "टैबूज - टोटेम" के साथ-साथ "प्रीस्टली किंग" और "मेडिसिन मैन" के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान का भाव है ।

आदि मानव ने दैनिक जीवन के अनुभव के आधार पर सोचा था, कि जैसे कबीले के सरदार को उपहार देकर या स्तुतियों द्वारा प्रसन्न किया जा सकता है, उसी प्रकार इस असीम शक्ति को स्तुतियों, प्रार्थनाओं और मनौतियों द्वारा प्रसन्न करके, उससे मनचाहा लाभ अथवा बढ़िया उपज प्राप्त की जा सकती है ।(1)

आदि मानव की इसी कल्पना से धर्म का विकास हुआ ।

जादू के युग के मिथों में अन्धभावना, निषेध, गोत्र, प्रतीक, गोत्र - पवित्रता का बाहुल्य था । इन आध मिथों में वर्षा, आँधी, धूप, अकाल, जीवन मरण और व्याधियों आदि पर नियन्त्रण की आकांक्षा का वर्णन हुआ है, और अधिकतर आधि भौतिक शक्तियों को जादूगत शक्ति से विवश करने की भावना है । धर्म के युग में मिथों के स्वरूप में अन्तर आया । असीम शक्ति के प्रति आश्चर्य, श्रद्धा, जिज्ञासा, प्रसंशा, निवेदन, समपर्ण और पवित्रता का वर्णन होने लगा, और वर्षा, आँधी, धूल, अकाल, जीवन, मरण, और व्याधियों के नियन्ता देवी - देवताओं पर श्रद्धा और स्तुतियों द्वारा नियन्त्रण पाने की आकांक्षा मिथों में व्यक्त होने लगी । (2)

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वुन्डट ने संस्कृति के विकास को तीन युगों में बाँटा है । टोटेम का युग, वीरता का युग, और विज्ञान का युग । फ्रेजर का कथन है, कि टोटेम के युग में देवता, दानव और चमत्कारपूर्ण शक्तियों के मिथ विकसित हुए और वीरता के युग में आधिभौतिक शक्तियों और जादू की सहायता से अद्भुत कृत्य करने वाले सांस्कृतिक नायकों के मिथ । (3)

मिथ मुख्य रूप से जादुई क्रियाओं, अनुष्ठानों, कर्मकान्डों के साथ जुड़े उच्चरित अंश हैं, अतः मिथों का जन्म भाषा के जन्म के साथ ही हुआ होगा,

---

1. दि गोल्डेन बो - ए स्टडी इन मैजिक एन्ड रिलिजन - जे.जी. फ्रेजर -पृ0-13
2. नयी कविता में मिथक - डॉ0 राजकुमार - पृ0- 33
3. पूर्वोक्त - डॉ0 सत्येन्द्र - पृ0- 47

जबकि यह सम्भव नहीं कि जादू के युग में भाषा का विकास हुआ था, कि नहीं। भाषा के विकास-क्रम के आधार पर मैक्समूलर ने भी भाषा के विकास-क्रम के आधार पर मानव-संस्कृति के विकास को चार युगों में विभक्त किया है । धातुओं और न्याकरण के तत्वों के जन्म के युग को उन्होंने शाब्दिक युग कहा है । बोलियों के रूप ग्रहण के युग को उन्होंने भाषिक §डायलेक्टिक§ युग कहा है । भाषिक-युग के बाद उन्होंने मिथ §माइथोलोजीकल गाथाओं§ के निर्माण का युग माना है ।§1§

मैक्स मूलर का कथन है, कि सूर्य के कृत्यों को देवताओं की कथा के रूप में अभिव्यक्त करने वाला यह युग, भाषा में विश्लेषण और अमूर्त्तन के विकास का पूर्ववर्ती थी । §2§

जार्जकॉक्स का कहना है, कि भाषा के प्रथम चरण में प्रत्येक शब्द सवाक् चित्र था । प्रत्येक शब्द सूर्य, चन्द्र, उषा, मानवीकृत रूप में प्रयुक्त होता था, सूर्य का आकाश में चढ़ना और अस्त होना मानवी क्रियाओं के रूप में जाना जाता था । इसके बाद जब शब्द का मानवीकृत रूप स्पष्ट हो गया, तो उसे स्पष्ट करने के लिए उसका युक्तिकरण उसी नाम के व्यक्ति की कल्पना करके किया जाने लगा । सृष्टि के विविध नामरूपों की इस अवगति ने प्रथम मिथों को जन्म दिया । §3§

जार्ज कॉक्स के शब्दों में भाषा और मिथ का मूल एक है और अपने आरंभिक रूप में भाषिक-संकल्पना मिथ संकल्पना है । §4§

आधुनिक युग में "मिथ" शब्द के अर्थ विस्तार को ध्यान में रखें तो कथा, गाथा, किंवदन्ती, दन्तकथा, निजंधरी, धर्मगाथा, कल्पकथा, देवकथा, पुरावृत्त, पुराकथा, पुराख्यान, पौराणिक कथा, आख्यान, वैदिक कथा, औपनिषदिक कथा आदि कहने के अतिरिक्त "मिथ" कहना ही अधिक समीचीन है ।

यूनान की "माइथॉलोजी" में मिथों के प्रमुख पात्र राजा-रानियाँ ही हैं जो देवताओं के रूप में ऊपर उठते हैं, जैसे - सिसिफ्स और प्रौमिथ्यूस आदि ।

---

1. पूर्वोक्त - डॉ0 सत्येन्द्र - पृ0- 7।
2. पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0 - 6
3. पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0 - 7
4. द्रष्टव्य : -वही- पृ0- 47

अरस्तु ने भी मिथ के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं, कि इतिहास का लेखक उसका वर्णन करता है, जो घट चुका है, और मिथ लेखक उसका वर्णन करता है, जो घटित हो सकता है, इसलिए मिथ में दर्शन-तत्त्व अधिक होता है, और उसका स्वरूप इतिहास से भव्यतर है, क्यों कि मिथ सामान्य सार्वभौम की अभिव्यक्ति है, और इतिहास विशेष की । ﴾1﴿

डॉ॰ राधाकृष्णन् ने "यूहे मेरम" और अरस्तु के मिथ सम्बन्धी बिचारों के आधार पर मिथ और इतिहास के बीच भेदक रेखा खींचते हुए दोनों की प्रकृति को स्पष्ट किया है । उनका कहना है, कि मिथ इतिहास से भव्यतर है, क्यों कि ऐतिहासिक तथ्य शाश्वत सत्य नहीं होते, प्रत्येक क्षण उनका अवसान होता है । इस अवसान का रूपान्तरण हम मिथक में अन्तर्निहित मानते हैं, क्योंकि कालान्तर में मानव की सहज कल्पनाशील मनीषा उन ऐतिहासिक तथ्यों को अपनें अनुरूप, अपनी समिष्टगत एवं वैयक्तिक संवेदनाओं में रूपायित करती है, यह रूपायिती भव्यतर होती है, क्योंकि इसमें मानव मन का युग-युगों से सम्वलित एवं परिवर्तित राग अपनी आसक्ति के अवलम्बनों सहित मिथीय परिणति प्राप्त करता है यह मिथीय परिणति ही इतिहास की अन्तिम परिणति है, अतः मानव जीवन की पूर्णता है । इस पूर्णत्व की प्राप्ति के अनन्तर इतिहासगत अस्तित्व समाप्त हो जाता है । ﴾2﴿

प्रकृति से सम्बन्धी मिथक की उत्पत्ति के बारे में आचार्य यास्क और शौनक की व्याख्याओं से हुआ, परन्तु इस सम्प्रदाय की स्थापना मैक्समूलर और उनके अनुयायियों ने की । मैक्समूलर ने इस सम्प्रदाय को तीन भागों में विभाजित किया, जो बाद में सौरवाद, चान्द्रवाद, ऋतुवाद के नाम से जाना जाता है ।

सौरवादी शाखा के प्रमुख प्रस्तोता मैक्समूलर का कथन है, कि आदि - मनुष्य के कवित्वपूर्ण मिथों का प्रेरक सूर्य है, प्राचीन आर्य जाति के मिथ प्रकाश और अन्धकार के चिरंतन संघर्ष और अंधकार पर प्रकाश की विजय की कथात्मक अभिव्यक्तियाँ है । ﴾3﴿

भारतीय परम्परा में राहु-केतु की कथा, वृहस्पति के शाप की कथा गणेश के शाप की कथा, क्रोधित गौतम द्वारा चन्द्र को मृगछाला से मारने की कथा

---

1. "अरस्तू का काव्य-शास्त्र - डॉ॰ नगेन्द्र - पृ॰- 26
2. " द हिन्दू व्यूज ऑफ लाइफ " - डॉ॰ राधाकृष्णन् - पृ॰- 46
3. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद - पृ॰- 8

आदि मिथ कथाएँ आम प्रचलित हैं । ये सभी मिथ चन्द्रमा के इर्द-गिर्द ही घूमती हैं । ये सभी कथाएँ आध मिथों के ही विकसित रूप हैं । चान्द्रवादी सम्प्रदाय के विद्वानों ने चन्द्रमा के क्रिया-व्यापारों और विशेषताओं को सभी मिथों का मूल माना है ।

मैक्समूलर के अनुयायी विलियम जार्ज कॉक्स, ब्रिल, कोन्सतास, ने समूची प्रकृति और उसकी घटनायें मिथों के सृजन का आधार मानी गयीं हैं । इन्ही विद्वानों के विचारों से प्रभावित होकर वर्षों बाद - मैक्समूलर ने सूर्य - चन्द्र के अतिरिक्त अन्य प्राकृतिक उपकरणों और प्राकृतिक क्रिया-व्यापारों को भी मिथ का आधार मान लिया । आगे चलकर उनके शिष्य विलियम कॉक्स ने आकाश प्रभात, अग्नि, वायु, विद्युती, सूर्य, चन्द्र, मेध, आदि पर आधारित मिथों को विस्तृत किया है ।

प्रकृतिवादी सम्प्रदाय के प्रमुख व्याख्याता श्री ए० ए० मैक्डोनल ने भी इन्द्र और वृत्र के संघर्ष की व्याख्या प्रकाश और अन्धकार के संघर्ष की कथात्मक अभि - व्यक्ति के रूप में न करके आचार्य यास्क के कथन की पुष्टि की है, उनका कहना है, कि आँधी - पानी के बाद सूर्य के प्रकट होने की तथा प्रभात में रात्रि के अन्धकार से छुटकारा पाकर सूर्य के प्रकट होने की धारणा में भ्रम सा हुआ लगता है । §1§

मैक्डोनल के अनुसार मिथ दिव्य अथवा अलौकिक शक्तियों के प्रति मनुष्य की धारणा से सम्बद्ध होते है, जो देवों और वीरनायकों के सम्बन्ध में कहे गए होते हैं । तथा इनमें देवों और वीर नायकों की उत्पत्ति, इनके क्रिया कलाप और इनके गिर्द चतुर्दिक वातावरण का वर्णन होता है ।

उनका कथन है, कि ऐसे मिथों का आरम्भ एक पुरातन और अवैज्ञानिक युग में मानव - बुद्धि द्वारा प्रकृति की इन विचित्र शक्तियों और गोचर -घटनाओं की व्याख्या के प्रयास में निहित होता है, जिनका मनुष्य को साक्षात्कार करना पड़ा, वास्तव में ये मिथ पुरातन मानसिक अवस्था के अनुमानात्मक विज्ञान का ही प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि ऐसे वक्तव्य जिनका अत्यन्त सभ्य मनुष्य के लिए केवल लक्षाणात्मक महत्व ही होता है, वही इस आरम्भिक स्थिति में वस्तुतः अवलोकित घटनाओं की व्याख्यायें होते हैं । §2§

---

1. निरूक्त - आचार्य यास्क - अनुवादक - पं० शिव नारायण शास्त्री -पृ०- 40
2. वैदिक माइथॉलोजी - अनुवादक - ए०ए०मैक्डोनल - राम कुमार राय-पृ०-1-2

बोआँज कहते हैं, कि इन मिथों का आधार उस पुरातन मानसिक दृष्टिकोण में निहित है, जो समस्त प्रकृति को चेतनीकृत सत्ताओं का समूह मानता है, मिथ में कल्पना किसी प्राकृतिक घटना की व्याख्या एक ऐसे मूर्त प्राणी के रूप में करती है, जो मानवीय सत्ता के समान है । §1§

मिथ अपने अन्तिम विश्लेषण में किसी न किसी प्राकृतिक व्यापार की कथात्मक अभिव्यक्ति है । इस कथात्मक अभिव्यक्ति के आधार हैं, मानवीकरण और प्रतीकीकरण । §2§

अचेतन मन द्वारा प्रकृति के चमत्कारिक प्रभावों की अनुभूति का कल्पनात्मक सृजन ही मिथ है, यह सृजन यथार्थ के प्रति सहज स्फूर्त बिम्बात्मक प्रतिक्रिया है ।§3§

मैक्समूलर का कथन है, कि भाषा के निर्देश अस्पष्ट हुआ करते हैं, और जब तक भाषा विचार से समरूप नहीं हो जाती तब तक वह इस अस्पष्टता से मुक्त नहीं हो सकती, भाषा की यही अस्पष्टता मिथों को जन्म देती है । §4§

आदिम युग में अन्धश्रद्धा के कारण मानव प्रकृति भी प्रत्येक वस्तु को अपनी ही तरह सचेतन मानता था, इस लिए उस काल की भाषा में जो भी शब्द निर्मित हुए, वे हर वस्तु को जीवित वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करते थे । प्रत्येक शब्द §सूर्य, चन्द्र, उषा आदि§ मानवीकृत रूप में प्रयुक्त होता था । सूर्य का आकाश में चढ़ना और अस्त होना, मानवी क्रियाओं के रूप में ही जाना जाता था । कालान्तर में जब शब्द का मानवीकृत अस्पष्ट हो गया तो उसे स्पष्ट करने के लिए उसी नाम के व्यक्ति की कल्पना करके उसके गिर्द मानवी क्रियाओं का युक्तिकरण किया गया । सृष्टि के विविध नाम रूपों की इस अवगति ने प्रथम मिथों को जन्म दिया । §5§

भाषा शास्त्रियों ने मिथ के जन्म का कारण शब्द के अर्थ परिवर्तन को माना है जिसे चार भागों में बाँटा गया है ।

---

1. वैदिक माइथॉलोजी - अनुवादक - ए०ए० मैक्डोनल - राम कुमार राय-पृ०-1-2
2. पूर्वोक्त - दिनेश्वर प्रसाद - पृ० - 10
3. आधुनिक साहित्य आलोचना की चुनौती- डॉ० बच्चन सिंह - पृ०- 35
4. पूर्वोक्त - डॉ० दिनेश्वर प्रसाद - पृ० - 12 - 14
5. -वही- पृ०- 12 - 14

......9/-

1. अनेकार्थ शब्दों की नयी व्याख्या के कारण ।
2. समानार्थ या एकार्थ शब्दों में आये अर्थ-विच्छेद के नये स्पष्टीकरण के कारण ।
3. धात्वर्थ की विलुप्ति के नवीन युक्ति करण से ।
4. ध्वनि - साम्य के कारण पैदा हुए परिवर्तन के नवीन युक्ति करण से ।

मैक्समूलर तथा अन्य भाषा शास्त्रियों के विचारों का प्रभाव जे0 जी0 हर्डर, वाइसो, कासिरर आदि विद्वानों पर भी पड़ा । वाइसो ने अनुभव किया कि सर्व प्रथम भाषा भाव भंगिमा से आरम्भ हुई फिर मिथीय स्तर को छूती चित्रात्मक भाषा के माध्यम से विकसित होती हुई आधुनिक सभ्य और सुसंस्कृत समाज की सुव्यवस्थित और स्पष्ट - भाषा के रूप में विकसित हुई । {1}

वाइसो ने ही सर्व प्रथम यह कहा था, कि मिथ काव्य भाषा का ही एक रूप है, यही भाषा का वह आरम्भिक रूप है, जिसे आदि मानव अपने विकास की प्रथम स्थिति में जानता था ।

आदिम संस्कृति में मिथ विश्वास, नैतिकता, अनुष्ठान और सामाजिक व्यवहार का संरक्षण, समर्थन तथा कार्यान्वयन करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है, इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए मिथ विश्वासों, रीतियों और अनुष्ठानों को सुदूर अतीत में प्रतिष्ठित करके उन्हे अतिलौकिक वास्तविकता से सम्बन्धित करता हुआ पुराकालीन, पवित्र और मानवेतर सिद्ध करता है, उन्हे अनुल्लंध्य बनाकर स्थायित्व प्रदान करता है । इस प्रकार मिथ का लक्ष्य वर्तमान जीवन की वास्तविकता को ऐन्द्रजालिक विश्वास और निरपवाद सामाजिक, व्यवहार्यता से युक्त कर देना है । {2}

प्रतीकवादी विद्वान कासिरर का मत है, कि हमारा मानस मिथीय और दार्शनिक दो प्रक्रियाओं में कार्य करता है, मिथीय प्रक्रिया द्वारा यह तथ्यों का संघनन करता है, और दार्शनिक प्रक्रिया द्वारा तथ्यों का विवरण प्रस्तुत करता है । भाव यह कि मिथीय - प्रक्रिया संश्लेषणात्मक है, तो दार्शनिक प्रक्रिया विश्लेषणात्मक है । {3}

---

1. ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म - विलियम के0 विमसेट - जे0 आर0 कलीन्थ ब्रुक्स - पृ0 - 700 - 14
2. पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0 - 30
3. पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0 - 24

......10/-

कासिर का कथन है कि मानव - मानस में वास्तविकता ग्रहण करने और उसका सम्पादन करने की, दो साधारण व्यवस्थाओं के बीच कड़ी-रूप में कार्य करने वाली एक तीसरी व्यवस्था भी है, जिसे प्रतीक व्यवस्था कहा जा सकता है। मानव मानस इस व्यवस्था के कारण वास्तविकता को प्रतीक रूप में ग्रहण करता - हुआ उसका सम्पादन करता है। अत: ये प्रतीक वस्तु सत्ता के स्वभाव की अपेक्षा मानस के स्वभाव को ही व्यक्त करते हैं। भाव यह कि मनुष्य के अनुभव का कोई भी वास्तविकता का यथा तथ्य ग्रहण नहीं है, अर्थात् मनुष्य वस्तु जगत से प्राप्त संवेदनाओं को यथावत ग्रहण नहीं करता, वह उन्हे रूपान्तरित कर प्रतीकों का रूप प्रदान करता है। §1§

श्रीमती लैंगर का कथन है, कि मिथीय चिन्तन वैज्ञानिक या विश्लेषणात्मक चिन्तन का पूर्ववर्ती है। इसी आधार पर वे मिथ को आदिम दर्शन का महत्त्व देती है। वे मिथ को वस्तु जगत का निरूपण नहीं मानती, किन्तु इसे रूपकात्मक जगत चित्र और जीवन का अन्तर्दर्शन कहती हैं, और कहती हैं कि ये तत्त्व मूलक चिन्तन की आदिम स्थिति, सामान्य धारणाओं का प्रथम मूर्त्त रूप हैं। श्रीमती लैंगर के अनुसार मिथ - मानवीय अस्तित्त्व के नाटक हैं, इनका अन्तिम लक्ष्य जगत का काल्पनिक निरूपण नहीं, बल्कि इसके §जात के§ मूल भूत सत्यों का गम्भीर परिदर्शन है। §2§

श्रीमती लैंगर आगे कहती है, कि मिथ का स्वरूप निर्वैयक्तिक और सामाजिक है। उसके नायक व्यक्ति न होकर सम्पूर्ण कबीले या समाज के प्रतिनिधि है। उनके कृत्य प्राकृतिक शक्तियों के विरूद्ध मानवीय संघर्ष और उन पर §प्राकृतिक शक्तियों पर§ सामाजिक शक्तियों की विजय के प्रतीक हैं। मिथ में एक ओर समाज और व्यक्ति के सम्बन्ध हैं तो दूसरी ओर प्रकृति और मानवजाति के पारस्परिक सम्बन्ध जो काव्यात्मक फैंटेसी के रूप में संकल्पित होते हैं। §3§

वे तो यह भी स्वीकार करती है, कि आदि - मानव प्रकृति का मानवीकरण ही नहीं करता बल्कि मानव का प्रकृतिकरण भी करता है, इसी कारण

---

1. पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0 - 23
2. " फिलॉसफी इन ए न्यू की " - एस0के0लैंगर - पृ0- 163
3. पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0 - 27 - 28

लोक नायकों के संकेतों पर आँधी आती है, या थम जाती है, सूर्य तीव्र चमकता है, या धीमा - धीमा ताप देता है । उनके कहने का तात्पर्य यही है, कि मिथ का वास्तविक आधार तत्व-विचार नहीं अनुभूति हैं । मिथ आवेग से उत्पन्न हैं और आवेगात्मक पृष्ठ-भूमि इसके सभी उपादानों को अपने विशेष रंग से रंजित कर देती है । ‌(1)

फ्रायड का कथन है, कि अवचेतन में दबी हुई अतृप्त वासनाएँ जब अर्द्धचेतन की दहलीज पार करती हैं या अर्द्धचेतन से छनकर अभिव्यक्त होती हैं तो इनका भेष, रंग, रूप, आकार, हू - ब - हू न रहकर चेतन के अंकुश या नियंत्रण के कारण प्रतीकात्मक हो जाता है, अतः स्वप्न, काव्य और मिथ में हमारा अवचेतन प्रतीकात्मक होकर अभिव्यक्त होता है । युंग ने तो आत्म को ही चिन्त की समग्रता का केन्द्र होने के कारण स्वप्नों, बिम्बों और प्रतीकों का सर्जक, नियामक और उद्गम स्रोत्र माना है । (2)

"आत्म" की प्रकृति को प्रकट करने वाली मानसिक घटनाओं में मिथ और स्वप्न प्रमुख उपकरण है । जब चेतन और अवचेतन दोनों स्थिति होती है, तो प्रतीक का निर्माण होता है, इस स्थिति के अभाव में कोई प्रतीक निर्जीव होकर चिन्ह मात्र रह जाता है, अतः व्यक्ति भेद से प्रतीक का चिन्ह रूप में और चिन्ह का प्रतीक रूप में ग्रहण सम्भव है ।

वे आगे कहते हैं, कि "आदिम-मानव जब सूर्योदय की घटना देखता है, तो उसके अवचेतन (व्यक्ति अवचेतन + सामूहिक अवचेतन) से उद्भूत किसी प्रतीक का उस पर प्रेक्षण हो जाता है । इस रूप में वह घटना - किसी देवता या नायक के भाग्य का बिम्ब बन जाती है । इस प्रकार ऋतुओं आदि से सम्बद्ध आदिम मिथ बाह्य घटनाओं के व्यंजक अध्यवसित रूपक न होकर-अवचेतन की अभ्यान्तर घटनाओं की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ है । " ।

जहाँ तक दमित वासनाओं का प्रश्न है, वहाँ पर प्रतीकीकरण को अधिक महत्त्व दिया गया है, फ्रायड के इस कथन को अधिक स्पष्ट किया युंग ने उनका कथन है कि "स्वप्नों, फैंटेसियों और दिव्य दर्शनों के बिम्बों और प्रतीकों में ऐसी बहुत सी सामाग्री प्राप्त होती है, जिसका सम्बन्ध निजी चित्तीय जीवन और उसकी

---

1. पूर्वोक्त - डॉ० दिनेश्वर प्रसाद - पृ०- 25 - 27
2. आय बिम्ब और मुक्ति बोध की कविता - कृष्ण मुरारि मिश्र - पृ०- 27

दमित वासनाओं से नहीं होता, सामूहिक अवचेतन को अभिव्यक्त करते हैं । §1§

मिथ अर्थात मिथक :

डॉ0 राजेन्द्र मिश्र ने लिखा है, कि अपने समाज की नियति को उसकी सम्पूर्णता में पहचानने के लिए कवि मिथकों §मिथ§ से उलझता है । एक तरह से मिथकों से गहरा उलझाव सामाजिक जिन्दगी में रचनात्मक हिस्सेदारी का ही दूसरा नाम है । बहुत दूर के प्रतीकों और मिथकों से जुड़ने की प्रक्रिया दरअसल अपने साथ सम्बाद करने की प्रक्रिया है, अपने एक ऐसे अंश के साथ जो हमारे चेतन - अस्तित्व के लिए अनजाना है । इस कथन के सम्बन्ध में उन्होंने रेनेवेलेक के कथन का उदाहरण देते हुए कहते हैं, कि कल्पनाजीवी लेखक को समाज में कलाकार की हैसियत बनाये रखने के लिए मिथक §मिथ§ की आवश्यकता रहती है । इससे यह बात सिद्ध होती है, कि कलाकार समाज के घनिष्ठ सम्पर्क में बने रहने की तीव्र आवश्यकता महसूस करता है । मिथकों §मिथ§ का जातीय स्वभाव रचना के साथ उसके सम्बन्धों को बहुत दूर तक नियन्त्रित करता हैं । मिथकों §मिथों§ का रचनात्मक इस्तेमाल स्वयं उनके स्वभाव से भी निर्धारित होता है । अपने संसार की बुनियादी चिन्ताओं को उजागर करने के लिए मिथकों §मिथों§ का इस्तेमाल एक कवि के लिए सुविधा की स्थिति भी हो सकती है, और भीतरी जरूरत भी । जिनके लिए मिथक §मिथ§ अभिव्यक्ति की सुविधाएँ जुटाने के साधन भर हैं, वे कभी यथार्थ का आरोपण करते हैं, किन्तु जिनके लिए मिथक §मिथ§ अतीत और वर्तमान के जिन्दा तनाओं से जूझने के माध्यम है, उनकी रचना में वे नये आयामों के साथ एक बार फिर से नया जन्म पाते हैं । §2§

"मिथक शब्द" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी" की देन है । उन्होंने कहीं भी यह निर्देश नहीं दिया कि "मिथक" अंग्रेजी शब्द "मिथ" से निर्मित है, परन्तु जैसे उन्होंने नार्म से "नरम" नार्मल, से "नरमिल", "एवनार्मल" से अपनरमल शब्द निर्मित किये हैं, उसी तरह "मिथ" से "मिथक" का निर्माण किया है । इसके अतिरिक्त संस्कृत शब्द मिथ का सहारा लेते हुए वे यह भी कहते हैं, कि भाषा को समृद्ध करने और भाषा द्वारा समृद्ध होने में वे एक-दूसरे के पूरक हैं ।

---

1. दृष्टव्य - पूर्वोक्त - डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद - पृ0- 21 - 24
2. नयी कविता में मिथक - डॉ0 राज कुमार - पृ0 - 50

मिथ: पूरक अतएव मिथक । मिथ पूरक का अर्थ है परस्पर पूरक । अतः द्विवेदी जी "मिथक" को परस्पर पूरक के अर्थ में ग्रहण करते हैं । (1)

मिथ तत्व वस्तुतः भाषा का पूरक है, सम्पूर्ण भाषा इसके द्वारा प्रवाहित है, आदिमानव के दिमाक में इकट्ठी हुई कई अनुभूतियाँ मिथक के रूप में प्रकट होने के लिए बेचैन रहती है । किन्तु जब वे भाषा के द्वारा प्रकट होती है, तो उपरी सतह पर वे तर्कहीन, एकरंगी, और मिथ्या सी जान पड़ती हैं । किन्तु जब हम उनकी गहराई में जायँ तो वे मनुष्य के अन्तर्जगत् को अभिव्यक्त करने का एकमात्र साधन सी लगती हैं । काव्य, चित्र, कथा, आदि के रूप में रचनाकार को प्रेरित, चालित, और समृद्ध करने का प्रयास करते रहते हैं । यह अनेकों प्रकार के उपमानों उत्प्रेक्षाओं और रूपकों द्वारा मनुष्य के आन्तरिक अनुभूतियों को प्रकट करता रहता है । किसी बात को प्रस्तुत करना और अप्रस्तुत विधान के माध्यम से उपयोग्य बनाने की प्रक्रिया वास्तव में मिथक तत्व द्वारा ही चालित होती हैं । ईर्ष्या को जब हम दाह, डाह, या जलन कहते हैं तो वस्तुतः उत्प्रेक्षा करते हैं । मानों जलन में जैसा कष्ट होता है, वैसा ही कष्ट, किन्तु प्रारम्भिक काल में मिथक - तत्व काव्य नहीं होते । क्यों कि काव्य तो एक ऐसी विधा है, जो परवर्ती काल से ही रचनाकार के दिमाक में होती है, जो काव्य के पीछे काम करने वाली रचनात्मक शक्ति वह मूल ~~xxx~~ आदिम मनोभाव हैं, जिन्हे हम मिथक कहकर ही व्यक्त कर सकते हैं । मिथक उस सामूहिक मानव की भाव - निर्मात्री शक्ति की अभिव्यक्ति है, जिसे मनोवैज्ञानिक आर्किटाइपल इमेज के रूप में जानते हैं । (2)

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है, कि "चेतन अहं बहिर्जगत् की तर्कसंगत व्यवस्था का कायल है । कलाकार के हृदय में जो मिथकीय सिसृक्षा उदित होती है, वह अवचेतन चित्त की वेगवती शक्ति है । वह समष्टि चित्त की ऐसी अनुभूति है, जो विविक्तवर्णा भाषा के प्रादुर्भाव के पहले की है । उसे चाहे आर्किटाइप कहिए, समिष्ट चेतना कहिए, या तान्त्रिकों की भाषा में "सर्वात्मिका संवित्" कहिए, बात एक ही है, भाषा जब कुछ अधिक अग्रसर हो जाती है तो वह भी मूल मिथक भावनाओं पर अपना दबाव डालती रही है। इस लिए परवर्ती काल की मिथक परम्परा पुराण-कथा या माइथॉलोजी के रूप में विकसित होती है।(3)

1. मिथक और काव्य - डॉ0 राज कुमार - पृ0 - 48
2. - वही - पृ0 - 48
3. - वही - पृ0 - 49

इस तर्क द्वारा सिद्ध किया जा सकता है, कि रूपगत सुन्दरता को माधुर्य ﴾मिठास﴿ और लावण्य ﴾नमकीन﴿ कहना बिल्कुल झूठ है, क्यों कि रूप न तो मीठा होता है, और न ही नमकीन, किन्तु हमें किसी बात को किसी माध्यम के द्वारा कहना पड़ता है, क्यों कि आन्तरिक अनुभूतियों एवं भावों को अभिव्यक्त करने के लिए बहिर्जगत् की भाषा में व्यक्त करने का यही एक मात्र सरल उपाय है, अगर तर्क द्वारा देखें तो, वही मिथक तत्त्व है । उपरी सतह पर यह झूठ सा प्रतीत होता है, किन्तु गहराई में जाने पर यह सत्य है ।" ﴾1﴿

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है, कि मिथक पुराण - कथा नहीं बल्कि सामूहिक मानव की भाव-निर्मात्री शक्ति की अभिव्यक्ति है । मूल मिथक, भावनाओं पर भाषा के दबाव के कारण आदिम काल के बाद, परवर्ती काल में मिथक परम्परा पुराण - कथा या माइथॉलोजी के रूप में विकसित हुई है । मिथक तत्त्व आन्तरिक भावों को ऐन्द्रिय बिम्बों में अनुदित करके उन्हे गोचर करने के प्रयास में निहित है ।वस्तुतः सर्जकेच्छा का रूपायन मिथक तत्वों से सम्बन्धित होता है । द्विवेदी जी ने मिथक को मनोवृत्तियों आदि को उपमानों, उत्प्रेक्षाओं, रूपकों और प्रस्तुत विधान द्वारा अभिव्यक्त करने वाली सर्जक कल्पना ही मानते हैं । मिथ ﴾पुराण कथा﴿ में मिथक तत्वों का संयोजन होता रहा है । अतः आधुनिक सन्दर्भ में मिथ को ही मिथक कहा जाने लगा है । ﴾2﴿

मिथक :

दुनियाँ के हर उस समाज में जिसका लम्बा इतिहास है, पिछले हजारों वर्षों से लगातार मिथकों का निर्माण होता आया है । और इसमें संदेह नहीं कि वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक विकास की उच्चतर मंजिल पर पहुँचे आधुनिक समाज में भी, भले भिन्न - भिन्न उद्देश्य से मिथक का नया निर्माण और प्रयोग जारी है । फिर भी कला और साहित्य के एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में इसकी प्रतिष्ठा हाल की घटना है, क्यों कि दीर्घ समय तक इसे पौराणिक कथा - ब्रह्मीमांसा या सांप्रदायिक धार्मिक विश्वास के रूप में देखने समझने की परम्परा थी, सच पूँछा जाय तो, नव जागरण के बाद बुद्धिवादी, राष्ट्रीय और प्रगतिशील आन्दोलनों में व्यापकता के साथ ही मिथकों की विरासत का अविष्कार हुआ । ﴾3﴿

---

1. नयी कविता में मिथक - डॉ0 राजकुमार - पृ0- 49
2. -वही- पृ0- 50
3. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शंभुनाथ चतुर्वेदी - भूमिका में ।

......15/-

मिथक की विवेचना के इतिहास में उस समय एक मोड़ आया जब सिर्फ लोक विश्वास की जमीन से नहीं, बल्कि इतिहास, भाषा शास्त्र, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान, क्रियात्मक संरचनावाद आदि विकसित ज्ञान विज्ञान के औजारों द्वारा "मिथक" की जाँच और व्याख्या की परम्परा स्थापित हुई । §1§

प्राचीन काल में देव कथाओं और अन्य पुरावृत्तों का मूल आशय क्या है, वे कथायें वस्तुतः क्या उपस्थित करती है, हर कथा के पीछे, एक न एक गूढ़ या अमूर्त ऐतिहासिक सच्चाई हर कथा के अन्दर मौजूद है, इस काल में मिथक खूब जोर-शोर से बुद्धिवादी औजारों द्वारा प्रतीकात्मक व्याख्या के विषय बनें और काव्य में भी इसके प्रयोग , जमकर हुए ।

हर समाज के मिथक की अपनी अलग परम्परा है, जिससे उस समाज के लोगों के खास विश्वास और सूझ की पहचान बनती है, इनके लिए हुए यथार्थ और आदर्शों का पता चलता है तथा उनके सांस्कृतिक पुनर्रचना के निरन्तर प्रयास का भी अहसास होता है । जो बुद्धिवादी विचारक परम्परा विद्रोही न थे, और अपने - अपने देश की सांस्कृतिक विरासत का महत्व समझते थे, उन्होंने इस धारणा का खंडन किया कि जो कुछ झूठ, गप्प, क्रमहीन, अतार्किक या अयथार्थ है, वही मिथक है, नवजागरण की बौद्धिक छत्रछाया में मिथक की चर्चा के केन्द्र में यह सवाल मुख्य न था, कि मिथक सच है, या नहीं, मुख्य सवाल यह था कि प्राचीन देव कथाओं और अन्य पुरावृत्तों का मूल आशय क्या है, वे कथायें वस्तुतः क्या उपस्थित करती है, बुद्धिवाद की रोशनी में अब साफ था, कि कथाओं का बाहरी ढांचा झूठा है, लेकिन यह भी साफ हो चला था, कि इनका आशय झूठा नहीं है । एक न एक या अमूर्त ऐतिहासिक सच्चाई हर कथा के मुखौटे के अन्दर मौजूद है । इस काल में, मिथक खूब जोर-शोर से बुद्धिवादी औजारों द्वारा प्रतीकात्मक व्याख्या के विषय बनें और काव्य में भी इसके प्रयोग जमकर हुए । §2§

इस प्रक्रिया में आगे चलकर साम्राज्यवाद के बौद्धिक असर के कारण कुछ ऐसी धारणाएँ भी विकसित हुई, जो मिथक की विवेचना को सांस्कृतिक विरासत के पुनः आविष्कार के क्षेत्र से घसीट कर एकांगी बुद्धिवाद के नियंत्रण में ले जाती थी।

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शंभुनाथ चतुर्वेदी - पृ०- ।
2. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शंभुनाथ चतुर्वेदी - अपनी भूमिका में ।

परिणामस्वरूप मिथक की संकीर्ण वैज्ञानिक व्याख्याएँ सामने आयी, एकांगी बुद्धिवाद के अनेक कमाल दिखाए और साम्राज्यवाद का मकसद पूरा किया, आधुनिकतावादी आलोचकों ने भाषा और समाज की परम्परा को पहचानने के नाम पर वस्तुतः इनकी खूबियों को ढँक दिया । साम्राज्यवाद का मकसद ही है, परम्परा की खूबियों को ढ़ंकना तोड़ना - फोड़ना या नष्ट करना । इसमें सन्देह नहीं कि मिथक एक वैश्विक सांस्कृतिक मामला है, तथा कुछ सामान्य तत्व दुनियां के हर समाज के मिथक में है, फिर भी हर समाज के मिथक की अपनी अलग परम्परा है, जिससे उस समाज के लोगों के खास विश्वास और सूख की पहचान बनती है, इनके जिए हुए यथार्थ और आदर्श का पता चलता है, तथा उनके सांस्कृतिक पुर्नरचना के निरंतर प्रयास का भी अहसास होता है । §1§

हर युग में लोगों ने मिथकों को नये स्तर से जिया और कलात्मक अभि - व्यक्ति दी । कृष्ण की बांसुरी पता नहीं मूलतः किस रूप में बजी होगी, लेकिन हर ऐतिहासिक युग में लोगों ने उसमें अपने समय की धुन सुनी, राम को उन्होंने पुरातन नहीं, अपने नये उद्देश्य की सिद्धि के लिए वन भेजा और शकुन्तला को अपनी नयी सौन्दर्यमयी भावना के रंग में जाना । कभी आदमी उस दिक्काल में था, जब सूरज के सात घोड़े हिनहिनाते थे, पर सभ्यता की लम्बी यात्रा में आज वह कारखाना के साइरन की आवाज सुनता है, इधर-उधर रंग-बिरंगे विज्ञापन देखता है, दफ्तर और बाजार जाता है, चुनाव के नारे पढ़कर भाषण सुनकर मतदान में भाग लेता है, सूखा और बाढ़, लू और शीत लहरी, अस्पताल और कचहरी में घिरता है खेलकूद और आन्दोलन में शामिल होता है, कहीं युद्ध और कहीं आतंकवाद की दहशत झेलता है, विकसित संचार-माध्यम के साहित्यिक सांस्कृतिक निर्माणों से गुजरता है । आज भी आदमी मिथकों की उतनी ही भरी-पूरी दुनियाँ में जीता है, भले इसमें सूरज के सात घोड़ों की उत्फुल्ल और निष्कलंक हिनहिनाहट की जगह अब बेचैनी, पीड़ा और त्रासदी का राज्य अधिक विस्तृत होता जा रहा है। §2§

प्राचीन समाज के मिथक की तुलना में आधुनिक समाज के मिथक अधिक चतुर, कलात्मक तथा उद्देश्यपूर्ण हैं । सायरन की आवाज, विज्ञापन, व्यवसाय, नारे,

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - अपनी भूमिका में ।
2. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - की भूमिका ।

भाषण, मौसम, नौकरशाही, खेल कूद, आन्दोलन, युद्ध, आतंकवाद, अखबार - फिल्म, टी.बी. के दृश्य आदि वस्तुतः जो बाह्य रूप प्रस्तुत करते हैं, अगर हम सिर्फ इतना ही देखकर सन्तुष्ट रह जायं तो सच्चाई कभी नहीं जान सकते । ये सारे के सारे रूप मिथकीय है, जिनका खास अपना अभिप्राय है । आधुनिक मिथकीय रूपों की एक खूबी है, कि ये प्राचीन मिथकीय रूपों की भाँति दीर्घजीवी नहीं हैं। आन्तरिक जीवन शक्ति के अभाव में इन्हे विकसित युक्तियों द्वारा जल्दी - जल्दी अपना चेहरा बदलना पड़ता है, ताकि बुर्जआ समाज के मिथकीय रूपों के अन्तर्निहित आशय और कार्य आसानी से पकड़ में न आयें । §1§

सन् 1960 के बाद मिथक के पुनः आविष्कार और विवेचना का जो बुद्धिवादी सिलसिला 20वीं शताब्दी में नये उत्साह से आरम्भ हुआ, वह सही मार्ग पर आगे न बढ़ सका, ऐसे वैचारिक - औजार निर्मित करने के स्थान पर जिनसे समाज के दीर्घजीवी परम्परागत मिथक तथा शीघ्र परिवर्तनशील नये मिथक के अंतर्निहित आशय तथा कार्य की ऐतिहासिक सौन्दर्यात्मक व्याख्या हो सके, ऐसे मिथक दर्शन बनने लगे, जिनके अधीन मिथक को मानवीय चेतना का स्वतन्त्र रूप, रिचुअल, फंतासी, स्वप्न प्रतीक, आद्यरूप, आत्मपरिपूर्ण, प्रतीकात्मक भाषा, आदिम समाज के विषय, साहित्यिक कच्चा माल, शोषक वर्ग का हथियार आदि कहा गया । इतिहास और समाज के सबसे विराट सौन्दर्यात्मक रूप एवं सांस्कृतिक परम्परा को जांचने के ये सभी परिप्रेक्ष्य गलत या अधूरे थे ।

कई हजार वर्षों से भाव प्रवण सौन्दर्यप्रेमी कवि समाज के यथार्थों और लक्ष्यों को मिथक का रूप देता आया है । किसी युग में उनका हथियार जादू और धर्म था । और आज विज्ञान है, इसमें कोई सन्देह नहीं कि शोषक वर्ग ने भी अपने मिथकों का प्रचार उसी स्तर पर किया तथा रूढ़ रीति या चमत्कार को मिथक के रूप में उपस्थित कर भ्रम फैलाया । लेकिन काव्य तथा कलाओं में मिथकों की पुर्नरचना किसी भी युग में गहरे प्रतिवाद से कम न थी । यह प्रचलित रूढ़िवाद और मतांधता का प्रतिवाद थी । जब वाल्मीकि ने "रामायण" लिखी, उनका राम का मिथक एक गहरा प्रतिवाद था । जब भिन्न परिस्थिति में "तुलसीदास" ने "रामचरित मानस" लिखा, तब भी, "निराला" की "राम की शक्ति पूजा" अपनी लीक से हटकर गढ़ी गई थी ।

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - की भूमिका ।

साठोत्तरी हिन्दी कवियों की श्रेष्ठतम उपलब्धियाँ मिथकीय कथाओं पर आधारित है । अन्य कविताओं में प्रतीक या संकेत के स्तर पर मिथक की भूमिका निर्णायक है, इसे देखकर लगता है, कि बुद्धिवादी समझ के विकास के बावजूद कविता की आधुनिक दुनियाँ में मिथक राज्य उठा नहीं, केवल स्थान्तरित हुआ, यथार्थ को अधिक गहनता से जानने और व्यक्त करने के लिए कभी-कभी उसके माध्यम से सच्ची बात कही जाती है । मिथक इसका सकारात्मक अवसर देता है । यथार्थ और मिथक का रिश्ता तब एक दूसरे के विरोधी का नहीं रह जाता । मिथक परम्परा की पूरी शक्ति से यथार्थ को उभारने और यथार्थ आधुनिकता को पूरी शक्ति से मिथक को नया स्तर देने में द्वंद्वात्मक रूप से सन्नद्ध हो जाते हैं, जिसकी परिणति कला, साहित्य और संस्कृति के विकास में होती है ।

साठोत्तरी हिन्दी कविता में मिथक और यथार्थवाद के बीच जो द्वन्द्वात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त हुई, उसे पहचानने का अर्थ है, अनेक नयी समस्याओं पर बहस करना, मसलन संयुक्त कुटुम्ब का विघटन, मूल्यहीनता, संशय, व्यक्ति का विघटन, अलगाव, बेचैनी, श्रम का शोषण, विखंडता, यांत्रिकता, मर्द औरत के बीच तनाव, स्वतन्त्रता, विषमता, व्यवस्था से विद्रोह, विडम्बना, मिथ्याकरन, अनावरण, प्रतिबद्धता, जनतांत्रिक मूल्य का संरक्षण और विकास, आदि का समावेश किया जा सकता है, लगभग 20वीं शताब्दी की कविता पर जब भी बहस होगी, यह समस्यायें जरूर उठेंगी । इन समस्याओं का समाधान आधुनिक कवियो ने जिस तरह उभारा और उन्हे कौन - कौन सी अर्थवत्ता प्रदान की, और इस काम में मिथकों ने उन्हें कैसी ताकत और गति दी, इसकी झलक दिखाई पड़ती है ।

मिथक का अर्थ :

मिथक को गप्प, मिथ्या और चमत्कारपूर्ण कथा मानने की बात या इसे आदिम मनोजगत या पौराणिक कथाओं तक सीमित कर देने की मान्यता काफी घिस चुकी है, प्रौद्योगिक समाज के आधुनिक मनुष्य की मिथक रचना की पद्धति पहले से भिन्न जरूर है, और आज रूपक कथा की अपेक्षा संकेतों से अधिक काम चलाया जा रहा है, फिर भी मानवीय जीवन और कला में परम्परागत और नये मिथक पूरी तरह मौजूद है । हर व्यवस्था में बहुत से मामले ऐसे होते हैं, जिन्हे गणित की तरह

साफ ढंग से नहीं कहा जा सकता, मिथक द्वारा ऐसे मामले व्यक्त होते हैं, उसके शब्दों का अर्थ भीतर की मिथकीय संरचना में होता है, जिसे सामूहिक विश्वासों की एक परम्परा से जुड़े हुए लोग बड़ी आसानी से समझ जाते हैं । इस लिए भी आधुनिक कला साहित्य में - मिथक का प्रयोग अधिक हुआ है । ज्यादा अच्छी कविताएँ मिथक को आधार बनाकर लिखी गई है । मिथक कविता ने हर साहित्य में अपना ऊँचा स्थान बनाया है, वह अधिक लोगों तक पहुँची है । इसके माध्यम से किसी जाति के सामाजिक, मनोविज्ञान, अर्थव्यवस्था, और कला के सौंदर्यबोध को समझने में भारी मदद मिली है । इन सब के बावजूद साहित्यिक अथवा समाज - शास्त्रीय स्तर पर ऐसे बहुत कम काम हुए हैं । जिनसे मिथक की सही अवधारणा बन सके । इसे धार्मिक अन्तर्वस्तु क्रिया अनुष्ठान, आदिम मनोविज्ञान - इतिहास विरोधी व्यापार तथा अबौद्धिक उत्पादन ही अधिक कहा गया है । (1)

मिथक जातीय अतीत का सबसे बड़ा खजाना है, इसकी सार्थकता के सवाल पर मिथक शास्त्र ही नहीं, इतिहास, भाषा, विज्ञान, नृतत्व शास्त्र, दर्शन शास्त्र, समाज शास्त्र के क्षेत्रों में अभी तक बहस चल रही है । अंग्रेजी मिथ से ही हिन्दी में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने "मिथक शब्द चला दिया । इसका मूल स्रोत्र ग्रीक "मुथोस" और लैटिन का "मिथास" है, जिसका अर्थ होता था, शब्द, कथा, या कहानी । "लोगोस" के सीधे और संगतियुक्त वक्तव्य से भिन्न अर्थ में " मुथोस " का इस्तेमाल किया जाता था । साहित्यिक आलोचना के अन्तर्गत इसे कथानक के अर्थ में भी ग्रहण किया गया । " भगवत शरण उपाध्याय " ने मिथक का एक स्रोत्र संस्कृत का "मिथ" माना जिसका अर्थ है, "रहसि" (जिससे रहस्य बनता है) अर्थात् एकान्त, निर्जनता, उन्होंने "मिथ" के विन्यस्त संयोग में "मिथुन" की ओर संकेत किया, जिसके प्रमाण है, संस्कृत का समूचा "ललित साहित्य" और भारतीय मंदिर । मिथुन विपरीत लिंगी जोड़े को कहते हैं । इससे "क्लाड लेबी स्ट्रास " के "विरूद्धों के युग्म" की संगति बैठती है, उसका कहना है, कि हर मिथक में जीवन-मृत्यु, सकारात्मक, नकारात्मक, पितृसत्ता, मातृसत्ता, शान्ति युद्ध, स्त्री-पुरूष के युग्म मिलते हैं । इस युग्म के क्रिया व्यापारों से ही मिथक की रचना होती है । पौराणिक कथाओं में विरूद्धों का युग्म सत्-असत् पक्ष के रूप में भी मिलता है ।

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 4

इन सबके बावजूद मिथक को मिथुन की संवेदना तक सीमित रखना उचित नहीं है। क्यों कि जीवन की सामाजिक प्रक्रिया में मैथुन स्त्री-पुरूष के बीच का एक मुख्य अंतर्सम्बन्ध है । किन्तु औरत से नातेदारी के अलावा व्यक्ति के सामाजिक होने के समान रूप से कुछ और जरूरी आधार भी हैं । उसे दूसरों को अन्य बहुत कुछ देना पड़ता है, और उनसे लेना भी होता है । वह वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय करता है, वह भाषा की विविध तरह की सामाजिक सौन्दर्यबोधात्मक संरचनाओं में विचारों का आदान - प्रदान करता है । यौन सम्बन्ध वस्तु और सेवाएँ, भाषा सामाजिक जीवन के इन सभी तरह के विनिमय रूपों से मिथक की कलात्मक - संरचना का सम्बन्ध है । मिथकों में उपरोक्त तरह के विनिमयों के चरित्र का विकास अन्वेषित किया जाय, तभी उनका वास्तविक अर्थ प्रकट होगा, क्यों कि मिथकों में सामाजिक यथार्थ का ही कलात्मक प्रतिफलन होता है । ‖1‖

फ्रेंच शब्द कोश में "मिथ" का अर्थ बतलाया गया है, जिसका यथार्थतः अस्तित्व नहीं है । ठीक दूसरी जगह कहा गया है, कि राजनीति में न्याय भी एक मिथक है । विश्व संस्कृति के विकास क्रम में "मिथ" के अर्थ का कभी अत्यधिक संकुचन हुआ और कभी - प्रसार । कार्नफोर्ड ने लिखा है, कि वास्तविक मिथक रचना के आदिम स्तर के बाद एक ऐसा संक्रान्ति काल आया, जिसमें पुराने जीवन के बिम्ब और प्रतीक रह गये थे, किन्तु लोगों की चेतना इतनी विकसित हो गई थी, कि वे बिम्ब और प्रतीक अपने मूल अर्थ से निकलकर रूपक या रूपक कथा बनने लगे । अन्ततः एक ऐसा वक्त भी आया, जब बौद्धिक सोच इतनी तेजी से विकसित होने लगी, कि पूरी जाति ही मिथक शास्त्र के स्वप्न से जाग उठी, "लोगोस" ने "मुथोस" की जगह ले ली । उक्तियाँ सीधे कही जाने लगी । मिथकीय संवेदना को अबौद्धिक कहने के पीछे पच्चीस सौ वर्ष पूर्व की ग्रीक हठकारिता थी जिसने काफी नुकसान पहुँचाया, जब कि सम्पूर्ण विश्व साहित्य में ग्रीक मिथक काफी लोकप्रिय रहे हैं । ग्रीक संस्कृति का इतिहास तो वस्तुतः मिथकों के प्रति उसके विकासशील रूख का इतिहास रहा है । इयुहेमरस ने भी 400 ई0 पूर्व ग्रीक मिथकों की नई व्याख्या प्रस्तुत करके सिद्ध कर दिया था, कि देवता और कोई नहीं मनुष्य ही थे, मिथक को इतिहास वास्तविकता और मानवीय दशाओं से जोड़ने की एक अच्छी शुरूआत इस विचारक ने की थी । ‖2‖

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ0 - 4
2. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ0 - 5

विश्व भर के आदिम मिथकों में प्रकृति को सर्वाधिक ताकतवर रूप में देखा गया । प्रकृति के पदार्थों ने उर्जा का रूप धारण कर लिया । दिन और रात्रि के मिथकों में चारों तरफ समानता मिलती है, क्यों कि सूर्य और चन्द्रमा के मिथक हर समाज में हैं । चाँद - तारों को सृजन की स्त्रैण शक्तियों के रूप में समझा गया । सूर्य को महत्ता मिली । भारतीय मिथक शास्त्र में सूर्य देवता का नाम हेलियस है, जो चार घोड़ों के रथ पर सवार रहते हैं, मिश्र (मिस्त्र) में "एपिस" नाम का सांड उत्पादकता का प्रतीक है । इसके सिर पर सूर्य का तथा पार्श्व में चन्द्र का चक्र है । सिन्धु घाटी की सभ्यता में बैल के चित्र विभिन्न वस्तुओं पर अंकित मिलते हैं । कुछ समाजों के कृषि - व्यवस्था में प्रवेश करने की प्रक्रिया में उर्वरता के मिथक जीवन में प्रधान हो उठे थे । सूर्य, चन्द्र, तारे, सांड, वृक्ष, विद्युत, धरती, जल, अग्नि, आदि के प्राकृतिक मिथक लोक जीवन में ऐसे नये अर्थों को लेकर उभरने लगे थे, जिनके प्रति मानव जाति का अटूट विश्वास था, उसकी समझ के वैज्ञानिक अभावों को मिथकीय अर्थों ने पूरा कर दिया था, मिथक ही आदिम - जीवन के विकास के ठोस उपाय थे । (1)

मिथक का विविध सन्दर्भों में प्रयोग :

मिथक का प्रयोग और मिथकीय समीक्षा आधुनिक काव्य में नये विषय के रूप में प्रयोग किये जा रहे हैं । पूर्व से पश्चिम में, विशेष रूप से अमरीका में इनका प्रयोग खूब जमकर किया जा रहा है । साहित्य के क्षेत्र में मिथक का प्रयोग होने के कई कारण हैं ।

डॉ० नगेन्द्र का कथन दृष्टव्य है :

" वर्तमान युग में विज्ञान - विशेषतः उद्योग विज्ञान के प्रसार से जीवन में सर्वत्र तर्क तथा बुद्धिवाद का आतंक इतना अधिक फैलने लगा है, कि भावना और विश्वास के लिए खतरा पैदा हो गया है, उपयोगितावादी दृष्टिकोण और व्यवहार विवेक ने सहज रागात्मक मूल्यों को खंडित कर दिया है, इस बढ़ते हुए खतरे का सामना करने के लिए संवेदनशील चिंतकों के लिए आदिम प्रवृत्तियों और संस्कारों

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 5

की पुनः प्रतिष्ठा करना अनिवार्य हो गया, आदिम मानव प्रवृत्तियों में मिथक कल्पना का अपना विशेष स्थान और महत्त्व है, इस लिए उसके प्रति आर्कषण आधुनिक संवेदना का एक सहज अंग बन गया है । ‌‌§1§

आधुनिक युग विज्ञान बुद्धिवादियों का युग है, वे आज के इस विज्ञान और तर्कशास्त्र से चिंतित है, उनके सामने एक विचित्र समस्या है, उनके मूल सिद्धान्तों का इसके परिणाम का जो उनके मन को उदेलित कर रहा है, एक तरफ धर्म के विधि - विधान को विलुप्त आस्था को फिर से जागृत करना बड़ा कठिन कार्य है । फिर भी इस समस्या के समाधान की तलाश जारी है, जिनमें बुद्धि भावना, तथ्य और आदर्श व्यष्टि और समष्टि तथा मानव और मानवता सृष्टि के बीच कोई दरार न पड़े, वह धर्म के किसी ऐसे विकल्प की खोज में है, जो इस युग के अनुरूप हों, कुछ प्रमुख विचारकों के अनुसार यह विकल्प उसे मिथक विधा में प्राप्त होता है ।§2§

कला और साहित्य का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अपने अलग-अलग विचार प्रकट किये हैं । उनका तर्क यह है, कि आधुनिक युग में ज्ञान - विज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है, कि कला और साहित्य का अध्ययन एकान्तरूप में नहीं किन्तु मानव चेतना की अन्य अभिव्यक्तियों - जीव विज्ञान, नृतत्त्व शास्त्र मनोविज्ञान दर्शन, भाषा शास्त्र आदि के परिप्रेक्ष्य में ही किया जा सकता है, क्योंकि इनका गठबंधन प्राचीन समय से आदिमानव जीवन के साथ अभिन्न रूप में संबद्ध मिथक विधा से जुड़ा हुआ है, इसी लिए साहित्य का अध्ययन और उसकी मौलिक अवधारणाओं के अधिगम के लिए मिथक विधा का सन्दर्भ अनिवार्य हो जाता है ।

मनो विज्ञान का विकास भी मिथक विधा की लोक प्रियता के लिए निश्चय ही उत्तरदायी माना जा सकता है, फ्रॉयड और युंग ने अपनी मूल प्रति - पत्तियों की पुष्टि के लिए मानव - मन की जिन चेतन - अवचेतन प्रक्रियाओं को प्रमाण - रूप में प्रस्तुत किया, उनमें स्वप्न तथा आधबिंब के साथ - साथ मिथक का भी विशेष महत्त्व रहा । अतः जब साहित्य के क्षेत्र में मनो विश्लेषण शास्त्र का प्रवेश हुआ तो मिथक भी अनायास अपनी सम्पूर्ण अनुवर्ती संकल्पनाओं के साथ उसमें प्रवेश हो गया । §3§

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ०-1।
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, जयपुर, इलाहाबाद
2. -वही-पृ0- 1-2 §3§ मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र -पृ० - 4

कला और साहित्य के गहन अध्ययन से यह पता चला है, कि पिछले कई दशकों से भाषा विज्ञान का प्रभुत्व बढ़ रहा है, भाषा विज्ञान को समीक्षा के लिए एक विशेष वृत्त में साहित्य के अध्ययन के रूप में गठित करने का प्रयास किया जा रहा है । आधुनिक भाषा विज्ञान का क्षेत्र जिन सीमाओं को छू रहीं है, उनमें सामाजिक, नृविज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, जो भाषा के उद्‌भव और विकास का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए आधार भूत सामाग्री प्रस्तुत करता है । इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता, कि आदिम मिथक समवाय इस सामाग्री का अत्यंत मूल्यवान उपकरण है ।

" इसमें सन्देह नहीं कि मिथक आधुनिक कविता की समीक्षा का एक ऐसा शब्द है, जिसका सबसे अधिक दुरुपयोग हुआ है, और जिसकी धारणा सर्वथा पंकिल बन गयी है । आज यह असत्य, सार्वजनिक भ्रान्ति, रहस्यवादी, स्वप्न कथा, आदिम विधा, ऐतिहासिक तथ्य का आलेख, दार्शनिक सत्य का प्रतीक, अचेतन अभिप्रेरणाओं का प्रतिबिम्ब - वस्तुतः किसी भी प्रकार की अचेतन धारणा का वाचक बन गया है । " ﴾1﴿

" इनमें से अन्तिम शब्द "मिथक" में अनेक प्रत्ययों का अन्तर्भाव मिल सकता है, जिसमें अन्य सभी शब्दों के अर्थांश सन्निहित है । "﴾2﴿

वर्तमान युग में कला और साहित्य का क्षेत्र इतना विस्तृत हो चुका है, कि इसमें सभी शास्त्रों का प्रवेश भी हो सकता है । "ब्लाक के शब्दों में आधुनिक आलोचकों के स्वर्गद्वार पर आपको ये शब्द अंकित मिल सकते हैं, यहाँ हर चीज चल सकती है । " ﴾3﴿

नये समीक्षक के मन में नवीनता के प्रति परम्परा से प्राप्त मान्यताओं से अलग वह नयी स्थापना के लिए इतना व्याकुल है, कि उसका दृष्टिकोण हमेशा अतिवादी और एकांगी हो जाता है, वह किसी ऐसी विचार धारा को लेकर चलता है, जहाँ पर उसे कभी-कभी उसमें उलझाव और अन्तरविरोध उत्पन्न हो जाता है, वह अपने विचारों को चमत्कारिक रूप में व्यक्त करने की लालच में कभी-कभी उलजलूल और अस्पष्ट शब्दावली का प्रयोग कर देता है, अनेक विद्वानों के मत देखिए:-

---

1. कल्चरल ऐथ्रॉपोलोजी एंड कंटेपरेरी लिटरेरी क्रिटिसिज्म - हैस्केल एम ब्लॉक - ﴾मिथ एन्ड लिट्रेचर, सम्पादक - जान बी विकरी - पृ0 - 134
2. दि मीनिंग्स आफ मिथ इन मॉडर्न क्रिटिसिज्म - वालेस डब्ल्यू डगलस -पृ0-118
3. मिथक और साहित्य - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 5

1. मिथक एक वृहद्-नियंत्रक बिम्ब है, जो सामान्य जीवन के तथ्यों को दार्शनिक अर्थ प्रदान करता है । (1)

2. मिथक बंधन और मुक्ति के उस द्वन्द की दिशा में पहला कदम है, जिसका अनुभव मानव - आत्मा स्वनिर्मित बिम्ब - सृष्टियों के सन्दर्भ में करती है । (2)

3. मिथक कोई वाष्पमय, अमूर्त्त अथवा अवास्तविक कल्पना नहीं है, वह सत्य का प्रज्वलित रूप है । (फ्रेजर) (3)

जैसा कि रिचर्ड चेज का कथन है, मिथक के साथ पश्चिम के अनेक उत्साही आलोचकों ने इतनी खींचतान की है, कि उसके अर्थ का अनंत विस्तार हो गया है । वह दर्शन है, तात्त्विक अथवा प्रतीकात्मक विचार है, अर्थशास्त्र है, सिद्धान्त - संहिता या विश्व दर्शन है, वह विज्ञान का प्रत्यक्ष विरोधी है - विज्ञान के सिक्के का दूसरा पहलू है । (4)

मिथक का स्वरूप :

मिथक अंग्रेजी के "मिथ" शब्द का हिन्दी पर्याय है, और अंग्रेजी का "मिथ" शब्द यूनानी भाषा के "माइथॉस" से व्युत्पन्न है । जिसका अर्थ है - "आप्तवचन" अथवा "अतर्क्य कथन" । अरस्तू ने कथा विधान (फ्रेबिल) के अर्थ में इसका प्रयोग किया है । हिन्दी में "मिथ" के लिए "कल्पकथा" "पुराकथा" आदि अन्य शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, किन्तु अब "मिथक" ही एक प्रकार से रूढ़ हो गया है । (5)

"मिथक" संस्कृत का सिद्ध शब्द नहीं है, संस्कृत में इसके निकटवर्ती दो शब्द है - (1) "मिथस" या मिथः जिसका अर्थ है परस्पर और (2) मिथ्या, जो असत्य का वाचक है, यदि मिथक का सम्बन्ध "मिथस्" से स्थापित किया जाय तो इसका अर्थ हो सकता है, सत्य और कल्पना का परस्पर - अभिन्न - सम्बन्ध अथवा ऐकात्म्य, मिथ्या से सम्बन्ध जोड़ने पर "मिथक का अर्थ" "कपोल कथा" बन सकता है, परन्तु वास्तव में "मिथ" के पयार्य रूप में मिथक शब्द के निर्माण में अर्थ - साम्य

1. मार्क शोरर - केनयन रिव्यू (शरद् अंक - 42)
2. कैसिरेर - दि फिलॉसफी ऑफ सिम्बॉलिक फार्म्स - भाग - 2
3. फ्रेजर - भाग - 1
4. नोट्स ऑन दि स्टडी ऑफ मिथ - रिचर्ड चेज
5. पाश्चात्य समीक्षा में मिथक, विविध सन्दर्भो का प्रचार-प्रसार -डॉ नगेन्द्र-पृ0-7

......25/-

की अपेक्षा ध्वनि साम्य की प्रेरणा ही अधिक रही है - अर्थात् समानार्थक की अपेक्षा यह समान - ध्वन्यात्मक शब्द ही अधिक है । §1§

मिथक मूल रूप से आदिम - मानव के समष्टि - मन की सृष्टि है, जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य रहता है, मिथक की रचना उस समय हुई जब मानव और प्रकृति के बीच की विभाजक रेखाएँ स्पष्ट नहीं थी । दोनों एक सार्वभौम जीवन में एक दूसरे के पूरक थे, ये सहयोग और संघर्ष के सूत्रों से बँधे हुए थे । और चेतन मानव का मन अज्ञात रूप से प्रकृति की घटनाओं को अपने जीवन की घटनाओं तथा अनुभवों के माध्यम से समझने का प्रयास करता था ।

इन तथ्यों को अधिक बल देते हुए अनेक विद्वानों ने अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है ।

" धार्मिक कर्मकान्ड की तरह मिथक में जीवन की सार्वभौम एकता की सहजानुभूति और मानव तथा प्रकृति के एकात्म्य की भावना निहित रहती है ।§2§

" मिथक का सत्य सर्वथा आत्मपरक एवं मनोवैज्ञानिक §मानसिक§ सत्य होता है, और वह जागतिक वास्तविकता को मानवीय भावनाओं की शब्दावली में व्यक्त करता है, यह तर्कणा शक्ति के आविर्भाव के पूर्ववर्ती मानव - अनुभवों का अभिलेख है । §3§

मिथक सम्पूर्ण मानव के समग्र अनुभवों की अभिव्यक्ति है । §4§

मिथक मानवीय ज्ञान - कोष के प्रतीकात्मक आलेख है । §5§

मिथक सत्य दर्शन के उन समस्त रूपों की समष्टि का नाम है, जो प्रयोग और प्रमाण से सिद्ध नहीं किये जा सकते, जो अनुभव और तर्क से परे है । " §6§

"मिथक असीम की ओर उठती हुई सार्वभौम भावना और सत्य का // विलक्षण रूप है । §7§ Reference ?

---

1. पाश्चात्य समीक्षा में मिथक, विविध सन्दर्भों का प्रचार-प्रसार -डॉ० नगेन्द्र-पृ०-7
2. मिथ, सिम्बॉलिज्म एन्ड ट्रुथ - डेबिड बिडने - पृ०- 36
3. ऐसे ऑन मैन - कैसिरेर - पृ० - 49
4. पोइट्री, मिथ एन्ड रिएलिटी - फ़िलिप ह्वीलराइट - पृ० - 102
5. बिटवीन मिथ एंड फिलॉसॉफी - ब्लैकमर - पृ० - 310
6. दि परसिस्टेंस ऑफ मिथ §काइमेरा§ - ऐरिस कालहर - पृ० - 234
7. दि बर्थ ऑफ ट्रेजडी - नीत्शे

.....26/-

उपयुक्त वक्तव्य मिथक के दो मूलवर्ती लक्षणों को रेखांकित करते हैं ।

1. मिथक सार्वभौम कल्पना है ।

2. वह आदिम मानव की सामूहिक अनुभूतियों का शब्दमूर्त्त रूप है, जिसमें मानव और प्रकृति की सत्ता की अभेद - चेतना निहित रहती है ।

ये दोनों लक्षण मिथक के तात्त्विक अंश पर प्रकाश डालते हैं । इनके अतिरिक्त कुछ वक्तव्य ऐसे हैं, जो उसके स्वरूप का प्रकाशन करते हैं । §1§

" सच बात यह है, कि यूनानी भाषा के शब्द "मिथ" का सीधा - सरल अर्थ ही ठीक है - मिथक एक कहानी, एक कथा या कांव्य है । §2§

" और इसी अर्थ में "गेजा रोहीम" ने उसे कल्पना को सत्य के साथ संबद्ध करने का प्रयास कहा है । "

मिथक पूर्ण अधिकार के साथ - प्रमाणिक रूप में - प्रस्तुत वृत्त वर्णन है - किन्तु उसका यह प्रामाण्य कथित न होकर व्यंजित होता है । उसमें ऐसी घटनाओं और स्थितियों का वर्णन रहता है, जो सामान्य मानव लोक से परे होने पर भी उसके लिए सर्वथा महत्त्वपूर्ण होती हैं । " §3§

इसी लिए चेज ने इन घटनाओं के लिए अतिप्राकृत शब्द का प्रयोग नहीं किया, उनके मत से ये प्राकृतिक विधान के अंतगर्त होने पर भी प्रकृति के सामान्य क्रिया - कलाप से भिन्न होती हैं । §4§

इन उद्धरणों से मिथक के रूप के विषय में निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं ।

1. मिथक का रूप कथात्मक होता है ।

2. इस कथा की घटनाएँ लोक - बाह्य, एक प्रकार से अलौकिक या अतिमानवीय होती है, किन्तु मानव जीवन के लिए उनकी अपनी विशेष सार्थकता अनिवार्यतः रहती है, अर्थात् अलौकिक एवं अतिमानवीय होने पर भी मानव जीवन के लिए वे किसी प्रकार अप्रासंगिक नहीं होती ।

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 8
2. नोट्स ऑन दि स्टडी ऑफ मिथ - चेज
3. इन साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका - भाग - 12 पृ० - 794
4. नोट्स ऑन दि स्टडी ऑफ मिथ - प्रीटर नेचुरल

उदाहरण के लिए हनुमान द्वारा समुद्र लंघन की {मिथकीय} घटना अतिमानवीय है, परन्तु स्वामी की प्राण - रक्षा के लिए सेवक के इस उत्कट उत्साह का मानवीय महत्व सर्वथा स्पष्ट है ।

3. मिथक की रचना में यद्यपि कल्पना का अनिवार्य योगदान रहता है, फिर भी उसकी प्रतीति सत्य रूप में ही होती है ।

4. अतः कल्पना और सत्य अथवा - भावगत सत्य और वस्तुगत सत्य की अभेद - प्रतीति मिथक की प्रकल्पना का आधार - तत्व है । {1}

सृजन कर्ता और आदिम मिथक :

सृजनकर्त्ता के आदिम मिथक हर समाज में हैं । इसी कोटि में नवीन शुरूआतों और जागतिक परिवर्तन के मिथक मिलते हैं । आदम और ईव की कथा बतलाती है, कि देवता ने सृष्टि को दो भागों में विभक्त कर किस प्रकार आदम और ईव को स्वर्ग से धरती पर भेज दिया । आदिम मिथकों का पहला महत्वपूर्ण कार्य विरूद्धों के बीच अलगाव का है । स्वर्ग से धरती के आकाश से पृथ्वी के, देवता से मनुष्य के, जल से भूमि के भटकाव से किसी लक्ष्य युक्त यात्रा के और भाववादी भ्रान्ति से वास्तव के अलगाव की प्रक्रिया शुरू हुई । मानव ने सबसे पहले आग की खोज की । फिर उसने जीवन को - सामाजिक रूप देना प्रारम्भ किया । समाज में विभिन्न संस्थायें बनना प्रारम्भ हुई, सभ्यता के मार्ग में सामाजिक राजनैतिक द्वन्द शुरू हुआ।{2}

भारत दुनियाँ भर की सभ्यता के इतिहास में इन्द्र-वृन्त्रासुर, राम, रावण, कौरव, पांडव के बीच हुए संग्राम की तरह और भी अनेक संग्रामों के मिथक पाये जाते हैं । सृजन के इन मिथकों के माध्यम से काल की एक ऐसी अवस्था प्रकट होती है, जब मनुष्य को प्रजापति की आवश्यकता पड़ने लगी थी, राज्य की आदिम अवस्थाओं में सृष्टि-रचना की अवधारणाएँ मिथकीय थी । मिथकों में ही समाज तथा जाति की अवधारणाएँ व्यक्त होती थी । समाज मानव जीवन और सृष्टि के बड़े आयामों की तलाश सृजनधर्मी मिथकों में हो सकती है, माना गया कि समाज से

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 9
2. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ0 - 6

बड़ा सच - राज्य है, राज्य से भी बृहत्तर सच यह पूरी सृष्टि है । समाज का कोई चालक है । तो सृष्टि को भी चलाने वाली कोई सत्ता जरूर है, मनुष्य ने आकाश, धरती, हवा, बादल इत्यादि और स्वयं को नये रूपों में देखा, मनुष्य के जीवन में पाप और द्वन्द है, उसका जीवन एक ऐसे लोक जीवन से अलग है, जहाँ किसी की मृत्यु नहीं होती, न कोई पापी है, न ही कोई द्वन्द है, बार-बार उसके ऊपर सैकड़ों विपदायें आतीं रही, कभी उसके प्रजापति ने बचाया, कभी सभी ने मिल जुलकर भौतिक विपत्ति से लड़कर अपनी रक्षा की, सामूहिक शक्ति से बड़ा वजन है, इसे ही दैवी - शक्ति के रूप में समझा गया । मनुष्यों को लगा कि कोई ताकत है, जो उन्हे बार - बार मुक्त करने के लिए आ जाती है । (1)

सृजन के जितने मिथक हैं, वे मनुष्य के विकास की पहचान कराते हैं, वे मनुष्य के मानवेतर चीजों की दुनियाँ से अलगाव के मिथक है । वे मनुष्य समाज और राज्य की मौलिक पहचान के मिथक है । संसार के सारे मिथक मनुष्य जीवन के मिथक है, और मनुष्य ही उनका निर्माता है । (2)

" मिथक शब्द का प्रयोग देवी - देवताओं अथवा अतिप्राकृत पात्रों और मानव जीवन के अनुभव से परे किसी (सुदूर) काल की असाधारण घटनाओं एवं परिस्थितियों से सम्बद्ध आख्यानों के लिए होता है ।"(3)

विद्वानों का एक वर्ग धर्म के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध मानता है, सामाजिक अर्थ में मिथक सांकेतिक संप्रेषण का एक प्रकार और धार्मिक प्रतीक विधा का विशेष अंग है । (4)

मिथक धार्मिक कर्मकान्ड के कलात्मक प्रतिरूप है, उसकी औचित्य - साधना का भाव कल्पनात्मक प्रयास हैं, मसीही धर्मशास्त्रकारों ने इसी अर्थ में "बाइबल" के प्राचीन संस्करण में उद्धृत कथाओं की व्याख्या की है, जिसमें उनके प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत दोनों रूपों को यथावत् मान्यता प्रदान की गई है । संक्षेप में, धर्मशास्त्र की शब्दावली में मिथक स्वतः प्रमाण अथवा रूढ़ धार्मिक सिद्धान्तों के आख्यान है ।(5)

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ०- 6
2. - वही - पृ० - 6-7
3. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका - भाग- 12 पृ०- 793
4. - वही - पृ० - 793
5. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 11

धर्म विज्ञान के अलावा इसका कई शास्त्रों में विवेचन किया जा सकता है, मनो विज्ञान, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्म विज्ञान के अलावा अन्य शास्त्रों ने भी अपने - अपने ढंग से मिथक का स्वरूप विवेचन किया है ।

मनो-विज्ञान :

मनो-विज्ञान के अनुसार मिथक प्राकृतिक घटनाओं की वस्तु परक व्याख्या न होकर, मानव - भावनाओं के बुद्धि - संगत व्याख्यान अथवा उन्हे मान्यता प्रदान करने के (अचेतन) प्रयास है । (1)

मनोविश्लेषण शास्त्र के दो प्रमाण - पुरूषों ने अपने - अपने सिद्धान्तों के आलोक में मिथक की परिभाषाएँ दी हैं । फ्रायड़ और उनके अनुयायी मिथक को स्वप्न का सजातीय मानते हुए उसे "इच्छापूर्ति का एक विधान" मानते हैं, जिस प्रकार हमारा अवचेतन मन सदैव अपनी दमित इच्छाओं की स्वप्नों अथवा दिवास्वप्नों के द्वारा पूर्ति करता है, इसी प्रकार पुराकाल में आदिम मानव अपनी रागद्वेष जन्य इच्छाओं - प्रेमजन्य वासनाओं और मृत्युजन्य संत्रास की भावनाओं को मिथकों के रूप में प्रतिफलित करता था । इनके विचार से स्वप्नों तथा दिवा - स्वप्नों के साथ इसी मौलिक सम्बन्ध के कारण मानव द्वारा मिथक - रचना की प्रक्रिया निरंतर चल रही है । (2)

आदि मानव को सूर्य को केवल उदित-अस्त होते देखकर संतोष नहीं होता था । वह बाह्य दृश्य को मानसिक घटना के रूप में रूपान्तर करना चाहते थे, सूर्य की इस यात्रा का किसी ऐसे देवता अथवा नायक के जीवन यात्रा या नियति के रूप में वर्णन करना आवश्यक था, जिसकी सत्ता उसकी अपनी चेतना के अतिरिक्त और कहीं नहीं थी । ग्रीष्म और शीत ऋतुओं का प्रतिवर्तन चंद्रबिम्ब का विकास और क्षय तथा वर्षा आदि प्राकृतिक घटनाओं के मिथकीय रूपान्तर इन भौतिक घटनाओं के प्रत्यक्ष अनुभवों के सांकेतिक या अन्योक्ति परक वर्णन नहीं है, ये वस्तुतः मानव मन के अंतगर्त होने वाले उस अचेतन नाटक की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो प्रक्षेपण की प्रक्रिया से अर्थात् प्राकृतिक घटनाओं में प्रतिबिंबित होकर, चेतन मन का विषय बनता है । (3)

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 11
2. -वही- पृ० - 12
3. आर्किटाइप्स ऑफ दि क्लौक्टिव अनकॉन्शस - डेविड बिडने - पृ० - 13

युंग के मत का सारांश यह है ।

1. मिथक मानव जाति के सामूहिक अचेतन में संचित - आद्य - बिम्बों भारतीय परा - मनो विज्ञान की शब्दावली में "प्राकल्न" संस्कारों के भाषिक प्रतिरूप हैं ।

2. स्वभावत: इनकी सत्ता सार्वभौम एवं सार्वकालिक होती है । और मानव जाति के धार्मिक, सामाजिक, मनो वैज्ञानिक, साहित्यिक एक शब्द में समग्र सांस्कृतिक जीवन में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है ।

3. सही अर्थ में, व्यक्ति का चेतन मन मिथक की रचना नहीं कर सकता - व्यक्तिगत अचेतन में भी इसकी क्षमता नहीं है । केवल सामूहिक अचेतन ही मिथक की सृष्टि कर सकता है, व्यक्ति का चेतन मन केवल प्रकल्पों का निर्माण कर सकता है, व्यक्ति का अचेतन मन स्वप्न कथा आदि की सृष्टि कर सकता है, जो मिथक न होकर मिथक के आभास होते हैं, जब कि सामूहिक चेतन ही वास्तविक मिथकों की सृष्टि करने में समर्थ है, जिनका स्वरूप सार्व - भौम तथा सार्वकालिक होता है । (1)

मिथक के प्रकार :

स्कॉटलैन्ड के सेंट एंड्रूज विश्वविद्यालय में यूनानी भाषा के प्रोफेसर एच0 जे0 रोज ने मिथक के स्थूल रूप से तीन प्रकार बताये हैं । अर्थात् मिथक को तीन भागों में बाँटा जा सकता है ।

1. सृष्टि - संबंधी मिथक
2. प्रलय संबंधी मिथक
3. देवताओं के प्रणयाचार - संबंधी मिथक (2)

सभी प्राचीन जातियों के वाङ्मय में इन तीनों की प्रचुरता का उल्लेख मिलता है, भारतीय वाङ्मय में पुराण का लक्षण इस प्रकार किया गया है ।

" सर्गश्च प्रति सर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम् ।। (3)

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 13
2. सेन्ट एंड्रूज विश्व विद्यालय - प्रोफेसर - एच. जे. रोज - पृ0- 104
3. हिन्दी विश्व कोष - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 122

जिस ग्रन्थ में सर्ग अर्थात् सृष्टि का आरम्भ प्रतिसर्ग अर्थात् पुनः सृष्टि का विकास एवं विलय, वंश अर्थात् सृष्टि के आदिम काल की वंशावली, मन्वन्तर अर्थात् सभी मनुओं के आधिपत्य काल की घटनाओं तथा वंशानुचरित यानी इतिहास के प्रमुख राजवंशों का वर्णन हो उसे पुराण कहते हैं ।" ॥1॥

विश्व की प्राचीन जातियों - जैसे मध्य एशिया की प्राचीन सामी जातियों की पुराकथाओं में सृष्टि के विकास के सम्बन्ध में एक विशेष मिथक का प्रयोग हुआ है । इसके अनुसार सृष्टि का उद्गम एक विशाल अन्डाकार पदार्थ से हुआ है । किसी समय यह अन्डाकार पदार्थ अपने आप फटकर सहसा दो भागों में विभक्त हो गया, और इसमें से एक देव अथवा एक प्रकार के अति प्राकृत प्राणी का जन्म हुआ, जिसने अन्डे के आधे भाग से आकाश का और आधे से पृथ्वी का निर्माण किया, भारतीय पुराणों में भी सृष्टि के विषय में इसी प्रकार की कल्पकथा प्रचलित है । मत्स्यपुराण में सृष्टि के आरम्भ की कथा प्रायः इसी प्रकार है, महा प्रलय के उपरान्त सर्वत्र अंधकार व्याप्त हो गया, तब स्वयं भू भगवान - नारायण रूप में प्रकट हुए, अपने शरीर से विश्व की रचना करने की इच्छा से उन्होंने पहले जल उत्पन्न किया, और फिर उसमें बीज की सृष्टि की, उससे सहस्त्रों सूर्यों के सदृश, दीप्तिमान, स्वर्ण और रजत के रंग का एक अंग उत्पन्न हुआ, जिसमें स्वयंभू नारायण, स्वयं प्रविष्ट होकर विष्णु पद को प्राप्त हुए । इसके पश्चात् भगवान ने सर्वप्रथम आदित्य की सृष्टि की, जिससे वेद पाठ करते हुए ब्रह्मा उत्पन्न हुए, फिर उस अन्डाकार पदार्थ को दो बराबर भागों में विभक्त कर आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, और उसके अलावा, क्रमशः दिशाओं शैलों, मेघ मंडल, नदियों, पितरों, मनुओं और नाना रत्नों से युक्त समुद्रों का आविर्भाव हुआ ।॥2॥

पुराणों में वर्णित आदिम काल की वंशावली तथा परवर्ती राजवंशों के मिथक - प्रधान वर्णन और देवताओं के प्रणय - विवाह आदि से संबद्ध मिथक भी मूलतः अधिक भिन्न नहीं है, क्यों कि जैसा कि रोज ने स्वयं यह स्वीकार किया है, उनके तीसरे वर्ग के अनेक मिथकों का सम्बन्ध निश्चय ही वंश-विकास के साथ है।

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 18
2. मत्स्य पुराण - द्वितीय अध्याय - सृष्टि प्रकरण

......32/-

इसमें कुछ मिथक तो विकास सम्बन्धी कल्पकथा मात्र हैं । यूनानी लेखक हेरोडोटेरा के ग्रन्थ में हेराल्काइटस पंद्रह मानव पीढ़ियों तक अपने वंश क्रम का संधान करने के बाद अंत में एक देवता को अपना सोलहवां पूर्वज मानता है, भारतीय पुराणों में तो इस प्रकार के वंश - वर्णन भरे पड़े हैं । राम और दशरथ की वंश परम्परा इक्ष्वाकु से पीछे अन्त में सूर्य के साथ ही जाकर जुड़ती है । इसी प्रकार चन्द्रवंशी अग्निवंशी आदि अनेक राजपरिवारों की कथाएँ नाना पुराणों में विभिन्न रूपों में वर्णित हैं । ﴾1﴿

अनेक पुरा कथाओं में आकाश की कल्पना पुरूष रूप में और पृथ्वी की नारी रूप में की गई है, जिनके मैथुन से नाना - रूपमयी सृष्टि का जन्म होता है । ﴾2﴿

मिथक के दो और भेद किए जा सकते हैं ।

1. प्राकृतिक मिथक
2. धार्मिक मिथक

धार्मिक मिथक के दो उपभेद हो सकते हैं ।

﴾क﴿ उपास्य देवों के स्वरूप से संबद्ध मिथक ।
﴾ख﴿ कर्मकान्ड संबंधी मिथक,

इसके अलावा सर्जन प्रक्रिया के अनुसार भी दो स्पष्ट भेद हो जाते हैं ।

1. मौलिक मिथक सामूहिक अचेतन की सृष्टि
2. अनुषांगिक मिथक जिनकी रचना वैयक्तिक अचेतन या अवचेतन के द्वारा होती है ।

मौलिक मिथक :- सामूहिक अचेतन की सृष्टि

एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयना दधि ।
शतं रथे भिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान् ।। ﴾﴾3﴿﴿

विश्वमस्या नानाम चक्षासे जगज्ज्योति कृणोति सूनरी ।
अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्त्रिधः ।। ﴾4﴿

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 20
2. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ०- 20
3. -वही- पृ०- 20-21
4. ऋग्वेद - 1,2,48,7

इसमें {उषा ने} उदयाचल से दूरवर्ती स्थान से लाकर अपने घोड़ों को रथ में जोत लिया है । यह सुभग उषा सौ रथों के साथ मनुष्य लोक की ओर बढ़ रही है ।

इसके दर्शन पर सम्पूर्ण विश्व प्रणाम कर रहा है यह {सूनरी} शुभ या सुन्दर नारी जग को ज्योतिर्मय कर रही है । दिव {स्वर्ग} की यह दुहिता दुष्ट और पापात्मा शक्तियों का विनाश कर चुकी है ।

2. आनुषंगिक मिथक :- वैयक्तिक अचेतन {अवचेतन की दृष्टि}

लो वह आई विश्वोदय पर, स्वर्ण कलश वक्षोजों परधर,
अर्ध्दविवृत कर ज्योति द्वार पर, ज्वलित रश्मियों की अंजलि भर,
वह पवित्रता-सी अभिषेकित, सद्यः स्फुट शोभा में आवृत,
आई स्वर्णोदय मंदिर में पथ प्रकाश का करने विस्तृत ।
आनन में लावण्य अगुण्ठित, प्रीति - दृष्टि आलोक से स्तिमित,
दिव्य चेतना की उषा वह, अधर पल्लवों में प्रभात - स्मित । {1}

मिथक का समतुल्य एक कथा-रूप है, लोक - गाथा या लोक कथा मैलिनोस्की ने इसे भी मिथक का एक भेद माना है । किन्तु अधिकांश विशेषज्ञ दोनों के स्वरूप और आत्मा में निश्चित अन्तर मानते हैं, गेजा रोहीम के अनुसार यह अन्तर, संक्षेप में इस प्रकार है । {2}

मिथक के पात्र प्रायः दैनिक होते हैं - और कभी-कभी मानवीय किन्तु लोक कथा के पात्र प्रायः मानवीय ही होते हैं, खास कर नायक तो मनुष्य ही होता है, जिसे अति-प्राकृत प्राणियों के विरोध का सामना करना पड़ता है ।

प्रसाद जी ने प्रलय और उसकी परवर्ती मनु-श्रद्धा, इड़ा की कथा को पूर्ण विश्वास के साथ ऐतिहासिक भूमिका पर प्रतिष्ठित किया है । आधुनिक नृवैज्ञानिक "मैलिनोस्की" ने इसी लिए अनुश्रुति को मिथक का ही एक प्रकार माना है । {3}

मिथक की घटनाएँ अनिवार्यतः एक निश्चित स्थान पर घटित होती हैं, जब कि लोक - कथा के किसी पात्र का कोई नाम नहीं होता और उसकी घटनाएँ नहीं घटित हो सकती है । {4}

1. स्वर्णिम रथ चक्र: उषा {मनुः स्वर्ग} -सुमित्रानन्दन पंत - पृ0- 22
2. मिथक और साहित्य - डा0 नगेन्द्र - पृ0- 20
3. मिथ एन्ड लिटरेचर - सं0-विकरी - पृ0 - 140
4. -वही- पृ0- 140

मिथक धार्मिक विश्वास का अंग होता है, उसके मूल में अतर्क्य विश्वास की भूमिका और तथ्य तथा कल्पना के समन्वय की चेष्टा रहती है, किन्तु लोक - कथा शुद्ध कपोल कथा है, उसका अपने से - इतर कोई उद्देश्य नहीं होता । §1§

श्री ए0 ए0 मैक्डोनल ने धर्म के दो पक्ष माने हैं ।

1. देवी देवताओं के वृत्त ।
2. धर्म का कल्याणकारी पक्ष ।

देवी - देवताओं के वृत्तों को उन्होंने मिथ §पुराकथा§ कहा है । धर्म के कल्याणकारी पक्ष §विधि-विधानों§ को उन्होंने माइथॉलोजी के साथ जोड़ा है ।

डॉ0 सत्येन्द्र का कहना है, कि मिथ §धर्मगाथा§ में किसी देवता अथवा परा - प्राकृतिक सत्ता का विवरण होता है, जिसे साधारणतया आदिम विचारों की शैली में लाक्षणिकता के साथ अभिव्यक्त किया जाता है । इसमें किसी सामाजिक संस्था, रीति - रिवाज अथवा जीवन और जाति के पारस्परिक सम्बन्धों पर सांकेतिक ढ़ग से विचार भी कर लिया जाता है, और धर्मावलम्बी किसी न किसी प्रकार के धार्मिक लाभ की आकांक्षा रखने के कारण इन्हे §धर्मगाथाओं को§ पढ़ता या पढ़ कर सुनाता है । §2§

डॉ0 सत्येन्द्र ने मिथ §धर्मगाथा§ के निर्माण के दो प्रमुख कारणों का वर्णन किया है ।

1. मनुष्य और सृष्टि के पारस्परिक सम्बन्धों की व्याख्या करने के लिए।
2. किसी सामाजिक संस्था, रीति, नीति, और प्रथा के अस्तित्व की व्याख्या करने के लिए ।

डॉ0 सत्येन्द्र ने मिथ §धर्मगाथा§ को चार वर्णों में विभक्त किया है ।

1. विश्व निर्माण की व्याख्या करने वाले मिथ ।
2. प्रकृति के इतिहास तथा प्रकृति की विशेषताओं की व्याख्या करने वाले मिथ ।
3. मानवी सभ्यता के मूल, स्त्रोतों की व्याख्या करने वाले मिथ ।
4. समाज तथा धर्म-प्रथाओं के मूल और पूजा के इष्ट के स्वभाव तथा उसके इतिहास की व्याख्या करने वाले मिथ । §3§

---

1. पूर्वोक्त - डॉ0 सत्येन्द्र - पृ0 - 89
2. -वही- पृ0 - 89
3. -वही- पृ0 - 168

वैदिक कालीन धर्म सर्वजनित से जुड़ा हुआ था, उसमें किसी तरह की भेद नीति नहीं थी, मात्र राजनीतिक सत्ता पर आर्यों के प्रति प्रेम और अनार्यों के प्रति घृणा का स्वर विद्यमान था, उस काल के लौकिक संघर्षों में कुल-देवताओं का सहयोग या उनकी कृपा का विशेष महत्त्व था, जिससे मिथों का रूप सद्-असद् के बीच या प्रकाश - अंधकार के बीच के संघर्ष का रूप धारण करने लगे थे, यही संघर्ष आगे चलकर राम-रावण, पाण्डव, कौरव, के परस्पर संघर्ष का रूपधारण कर, गये पौराणिक काल में "धर्म" शब्द का अर्थ - संकोच होता है, और आर्य धर्म के साथ-साथ बौद्ध, जैनधर्म विकसित हो जाने के कारण अनेक नये धर्म, वैष्णव, स्मार्त, शैव, शाक्त, आदि विकसित हो जाते हैं । ये धर्म धीरे-धीरे सर्वजन्य कल्याण की अपेक्षा वर्ग विशेष के कल्याण तक ही सीमित होने लगें । इसी कारण धर्म विशेष के अनुयायी अपने धर्म - धार्मिक विधि-विधान पूजा पद्धति और देवी-देवता के प्रति कट्टर होने लगे, भाव यह कि धर्म शब्द का अर्थ वैदिक धर्म की अपेक्षा संकुचित हो गया । और अब मिथों, देव कथाओं - पुराकथाओं का धर्म विशेष के प्रकाश में पुर्नगठन होने लगा, पौराणिक काल में मिथ देव कथा को पौराणिक कथा कहा जाने लगा ।(1)

डॉ0 शम्भूनाथ का कथन है, कि पौराणिक कथा में देव परिकर के समावेश के साथ - साथ धार्मिकता या धार्मिक माहात्म्य की भावना भी होनी चाहिए, इसके बिना वह देव कथा, भले ही बन जाय, धर्म गाथा नहीं बन सकती, इससे यह स्पष्ट होता है, कि देव कथा और धर्म गाथा का अलग-अलग स्वतंत्र अस्तित्त्व है, वस्तुतः पौराणिक काल में पौराणिक कथा (देव कथा, पुरा कथा, पुरावृत्त, पुराख्यान, मिथ) धर्म विशेष की मान्यताओं या विशेष धार्मिक दृष्टि से नियोजित होकर - धर्म गाथा बन गयी, अतः पौराणिक कथा धर्म गाथा का ही उत्तरोत्तर विकसित रूप है । (2)

उन्नीसवीं सदी का राष्ट्रीय नव जागरण इसी प्रक्रिया की देन था, एक जमाने में "तर्की" के "मुस्तफा कमाल" और हाल में "चीन" के "माओत्सेतुंग" ने इसी प्रक्रिया में धर्म की रूढ़िग्रस्त परिभाषाओं की जड़ खोद डाली थी । अतः अतीत की एक चीज धर्म का आधुनिक जीवन के विज्ञान में क्या स्थान हो सकता है, इसे लेकर काफी बहस चली, इसी बहस में ईश्वर की जगह मनुष्य ने और धर्म की की जगह राजनीति ने ले ली । फिर भी मिथकों का स्थान बना रहा, क्यों कि धर्म के एक नये परिवेश में सिर्फ अपना स्वरूप बदला था, और हमारा अतीत नष्ट नहीं हुआ था । (3)

---

1. नयी कविता में मिथक - डॉ0 राजकुमार -पृ0- 39
2. पूर्वोक्त - डॉ0 सत्येन्द्र -पृ0- 28 (3) मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ0- 24

भारतीय दर्शन में धर्म जीने का खास सामूहिक ढ्ंग ही नहीं, इस ढ्ंग का सतत् परिष्कार, गहन, आत्मान्वेषण, और वस्तुगत जिज्ञासा भी है । यह जनता को धारण करता है ।

" धारणाद्धर्म मित्याहु धर्मो धारयति प्रजा "। (1)

"गीता" में चित्त परिष्कार के लिए तत्वजिज्ञासा और सत्यान्वेषण ही धर्म है - "जीवस्य तत्व जिज्ञासा नाथो यश्चेह कर्मभिः । (2)

धर्म मनुष्य को अज्ञान से निकालता है । वह कर्मसापेक्ष होता है, नैतिकता, समता, चास्ता एवं स्वतन्त्रता से अपना सरोकार रखता है । पश्चिम में "रिलिजन" की परिभाषा देते हुए इसे जादू तथा विज्ञान से अलग किया गया, इसे राजनीतिक चेतना से संयुक्त होने नहीं दिया गया, जब कि हर धर्म विश्व स्तर पर राजनैतिक व्यापार था । इस्लाम ईसाइयत, बौद्ध धर्म, या हिन्दुत्व का अभ्युदय अपने-अपने क्षेत्रों में राजनैतिक प्रभावों से मुक्त न था, हर धर्म एक प्रतिवाद के गर्भ से निकला था, पनपा और सृष्टि में फैला था । (3)

पूर्व में अध्यात्म अधिक फैला, और पश्चिम में विज्ञान, क्यों कि दोनों जगहों पर ज्ञान की दो दिशाएँ थी, धर्म की व्याख्याएँ भाववादी होती थी, फिर भी लंबे काल तक धर्म "कार्लमार्क्स" के शब्दों में जीवन की वास्तविक व्यथा का प्रतिवाद था, हृदयहीन दुनियाँ का हृदय और भाव हीन जगत की आत्मा था । राजनैतिक दर्शन और समाज विज्ञान ने मनुष्य को जीवन के अर्थों एवं इनके एक पद्धति की रचना में केन्द्रीय स्थान दिया, फिर तो धर्म के समग्र व्यापार में ऐसी नृतत्त्व शास्त्रीय एवं सांस्कृतिक संरचनाओं की खोज होने लगी, जो दुनियाँ भर के मेहनत, कशों को आपस में जोड़ती हैं, और वैश्विक मानवीय एकता के ऐतिहासिक आधार प्रस्तुत करती है । मिथक और धर्म ने एक ऐसी उद्देश्य परक प्रवृत्तियाँ विकसित की जिससे नयी मूल संरचना और सामाजिक सांस्कृतिक पद्धतियों की स्थापना हुई । (4)

---

1. महा भारत - कर्ण0 - 69158 ।
2. गीता - ।।(2।10) ।
3. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ0 - 24
4. -वही- पृ0 - 24

नव फ्रायडवादी, एरिक, फ्राम जैसे मनोविश्लेषकों से प्रभावित होकर आधुनिक धर्म और मिथक के आयामों का अन्वेषण पुनः शुरू हुआ, और एक नये मूल्य बोध की स्थापना हुई, इसके साथ ही प्रतीकवादी यथार्थ का महत्त्व बढ़ा, इनमें आपस में विचार, विनिमय हुआ, जिसके तहत मिथक सिर्फ मानसिकता का व्यापार न बनकर किन्तु ऐतिहासिक विचारधारा से जुड़कर समूची जीवन प्रक्रिया का वस्तुगत विश्लेषण लेकर उपस्थिति होने लगा । §1§

आधुनिक कविता में धर्म और मिथक कोई निषेधात्मक सुख न होकर एक सकारात्मक विचार है । और मानव को उसके अतीत के इतिहास को तथा राष्ट्रीय स्तर पर एक सूत्र में बाँधने का कार्य भी करता है, मानव धर्म की बात करने वाले भी पुरानी रीति-रिवाज को झुठलाते हैं, और सेवा पर आधारित नवीन जीवन पद्धति की बात करते हैं, क्यों कि उनके लिए धर्म त्योंहारों और पूजा पाठ के अलावा कोई बड़ी चीज नहीं है नयी पीढ़ी और नयी क्रान्तिकारी व्यवस्था पहले से भिन्न अपने त्योहार और आस्थाकेन्द्र स्थापित कर रहे है, जो धर्म के लिए घातक साबित हो सकता है । इससे धर्म के प्रति लोगों को विलगाव का बोध होगा।इससे मानवीय प्रकृति इसमें रूंध जाती है, एक दिन समाज में सारे धर्म समाप्त हो जायेगें । फिर भी मनुष्य में विश्वास रहेगा । और वे हमेशा आधुनिक रूप में व्यक्त होंगे, जीवन की गतिशीलता का यही प्रमाण होगा । प्रसिद्ध समाज शास्त्री " डॉ० श्री निवास " धर्माचार्यों की तरह ही मानते हैं, कि जिस दिन जाँति - पाँति उठ जायेगी, हिन्दुत्व भी खत्म हो जायेगा, परन्तु यह धारणा बिल्कुल गलत है, आधुनिकरण की प्रक्रिया के जाति के उठ जाने पर भी आधारभूत विश्वासें का विलोप नहीं होगा, भले वे विश्वास तब राजनीति में गहरे स्तर पर क्यों न जुड़े होंगे । §2§

मिथक मनुष्य के सामाजिक विश्वासों के ही संरचनात्मक रूप है, जिन्हें आधुनिक कला में अपनाया गया है, नृत्य को आज धर्म की कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं मानकर मिथकीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति माना जाता है । §3§

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 24
2. -वही- पृ० - 25
3. -वही- पृ० - 25

संस्कृत काव्यों के धार्मिक नृत्य प्रसंगों इसकी संवेदना भिन्न - कोटि की थी, और व्यापक धरातल पर मिथकीय थी, मंदिरों और राजदरबारों से निकलकर नृत्य कला खुले - मंचों - थियेटरों पर आ गई, जिस तरह लाल पवित्र पोथियों से मुक्त होकर मिथ कविता ने अपना जनतांत्रिक स्वरूप पकड़ लिया ।(1)

हमारे सांस्कृतिक जीवन में कई मिथक हैं, जिनका धार्मिक महत्व नहीं है, पर जो समय-समय पर समस्त जाति को अनुप्राणित करते रहे हैं, नचिकेता, जटायु, अभिमन्यु, एकलव्य के मिथक इसी तरह के हैं । आधुनिक कविता में राम और कृष्ण किसी धार्मिक स्वरूप में नहीं, आते, वे समकालीन सन्दर्भ में समग्र मानवीय भावना और हमारी रचना प्रक्रिया का अविच्छिन्न हिस्सा बनकर उपस्थित होते हैं ।(2)

आधुनिक युग में ही नहीं पहले भी लोग लगभग एक तरह की सभ्यता - संस्कृति का अनुभव विभिन्न ढांचे में कर रहे थे, आज की महाशक्तियों की भाँति और इससे पहले की महा संस्कृतियों की अंतर्धाराएँ, एक समाज से दूसरे समाज, दूसरे से तीसरे फिर चौथे फिर पांचवे समाजों की ओर उन्हे रौंदते - बनाते हुए आ जा रही थी । मिथकीय भावना प्रत्येक संस्कृति की संरचना में समान स्तर पर विकसित हुई, फिर भी अलग-अलग क्षेत्रों की विशिष्ट भौतिक और भौगोलिक स्थितियों के कारण मिथकों के आधार भूत स्वरूप में थोड़ा बहुत फर्क आ ही गया।(3)

धार्मिक व्यवस्था के आधार पर हमारे देश का समाज कई भागों में बँटा हुआ है, और इसी धर्म के आधार पर लोगों के काम व्यवसाय आदि भी बँटा हुआ है, अमुक तरह के काम ऊँचे परिवार में जन्म लेने वाला ही कर सकता है, (अमुख) काम अमुक वर्ग का व्यक्ति ही कर सकता है । एक ही दुनियाँ में अमीर और गरीब अर्थात् जिन्हे हम आदिवासी और "डिस्को कल्चर" के आधुनिक अमीर दोनों रहते हैं, मनुष्य और मनुष्य के बीच यह भीषण दूरी कायम है, और यह दूरी तभी खत्म हो सकती है, जब आदिवासी पिछड़े और प्रौद्योगिक मनुष्य के बीच सांस्कृतिक दूरी को निकट लाना पड़ेगा, और आर्थिक शोषण पर आधारित यह समाज व्यवस्था को समाप्त करना होगा । (4)

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ0- 25
2. -वही- पृ0- 27
3. -वही- पृ0- 28
4. -वही- पृ0- 28-29

मिथक जड़ नहीं होते, क्यों कि उसके साथ युग की चेतना रहती है, संगीत, कविता, चित्र में इसकी कलात्मक अभिव्यक्ति, परम्परागत् धर्म के विकल्प की खोज है, मिथक पूरी मानवता की कला है, यह अतीत की नयी यात्रा है, जो हमारे आधुनिक जीवन में शामिल है, पूरे समाज के विकास से इसका सम्बन्ध है। §1§

आधुनिक मिथकों की विवेचना का प्रारम्भ "ग्यांबतिस्ता बिको" §1725§ ने की । उसने मिथक को वर्गीय प्रतीक के रूप में स्थापित कर मानवीय विचार और सामाजिक संस्थाओं के चक्रीय विकास का इतिहास सामने रखा, ऐतिहासिक परि - प्रेक्ष्य में मिथक को देखना एक नई बात थी, जो "बिको" से शुरू हुई । §2§

शेलिंग ने मिथक के रूपकात्मक स्वरूप के स्थान पर प्रतीकात्मक स्वरूप की विवेचना रचना की, मौलिक समस्या के स्तर पर की - और अपनी विवेचना को उसने मानव चेतना की स्वच्छंदता से जोड़ दिया मिथक मनुष्य की आत्मोपलब्धि का माध्यम था, स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के कारण उसने मिथक को बाहर की वस्तु न मानकर चेतना का भावात्मक हिस्सा माना । §3§

शेलिंग का कथन है, कि "देवताओं की परम्परा ने मानवीय चेतना को बार-बार घेरा है, हमारे जीवन के मिथक की रचना देवताओं के इतिहास के रूप में ही होती रही है, हम उसका अनुभव करके उसके अनुरूप जीते रहे हैं । §4§

शेलिंग के विचारों से मिथक के भाववादी प्राकृतिक विज्ञान या आत्म-केंद्रित मनो विज्ञान में अवरूद्ध हो जाने का खतरा हुआ, आगे चलकर " ओनील " ने मनुष्य की विराट अवचेतना को सभी देवताओं और नायकों की माता भी कहा, किन्तु रोमांटिक दृष्टिकोण की गुणात्मक भूमिका यह थी, कि उसने क्रिया अनुष्ठानिक सामंती संस्कारों को चुनौती दी, साथ ही मनुष्य का महत्व स्थापित किया । §5§

मिथक को सामाजिक व्यापार मानते हुए भी इसका अध्यात्मवादी विश्लेषण अधिक हुआ, जिससे फैली भ्रांतियों की वजह से मिथक को धर्म का विषय

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ०- 30
2. -वही- पृ० - 11
3. -वही- पृ० - 11
4. -वही- पृ० - 11
5. -वही - पृ०-11

माना जाने लगा । "मिरेका एलिआड" ने उसे पवित्र यथार्थ माना, और आध्यात्मिक ढ़ंग से इसका सम्बन्ध सृजन से जोड़ा, मिथकीय कथायें इस बात का संकेत देती है, कि कुछ भी अस्तित्व में कैसे आया, और मानवीय व्यवहार की कोई पद्धति अथवा संस्था कैसे स्थापित और सांस्कृतिक धारा में विकसित हुई, धार्मिक समाज के लोग अपने आचरण के स्तर पर प्रथम उत्पत्ति के मिथक दुहराते हैं । इसलिए मिथक क्रिया अनुष्ठान में परिणत हो जाते हैं । गृह प्रवेश के वक्त गृह प्रवेश की मिथकीय कथा इस लिए दुहराई जाती है, जिससे यह कार्य सुखद हो । "तै-तरीय ब्राह्म्ण" में उल्लिखित है, कि "ईश्वर ने ऐसा किया, अतः मनुष्य भी करता है । (1)

आधस्यीय समाज के मिथकीय जीवन पर टिप्पणी करते हुए, "मिरेका एलिआड" ने "मिथ एन्ड रियालिटी" में लिखा है, कि कोई व्यक्ति मिथक इस अर्थ में जीता है, कि वह प्राचीन घटनाओं के प्रभाव में रहता है, अतः वैसा ही वह जीवन में खास अवसरों पर दुहराता है, इस दृष्टिकोण में धार्मिक क्रिया अनुष्ठानों के स्वरूप में ही मिथक को पहचानने की प्रवृत्ति मिलती है । (2)

विलियम मार्शल अर्बन ने कहा कि मिथकीय चरित्र वैयक्तिक एवं अर्द्ध वैयक्तिक रूपों में अतिमानवीय कार्य संपादित करते हैं, किन्तु वे प्राकृतिक शक्तियाँ न होकर वैज्ञानिक अर्थ में यथार्थ की ही शक्तियाँ है । (3)

"मालिनोवस्की" ने मिथक के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहते हैं, कि मिथकीय विवरण सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणाओं से सम्बंधित होते हैं । इनका कार्य है, परम्परा के प्रति जागरूकता पैदा करना, और अतीत को नये जीवन मूल्यों के आलोक में पहचानना । इसी लिए "मालिनोवस्की" ने मिथक को सामाजिक संस्थाओं का "चार्टर" और मानव जाति का "दिवा स्वप्न कहा । "कैसिरेर" की तरह उसने भी स्वीकार किया, कि मिथक आत्मचेतना की वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति है, धर्म, नैतिकता और सामाजिक सहिष्णुता के विचारों के साथ मिथक एक अनुशासित सांस्कृतिक संगठन से जुड़ा रहता है । उनके मतानुसार - "मिथक मानव संस्कृति का एक जरूरी हिस्सा है, वह कोई बौद्धिक विवरण अथवा

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 12
   तैत्तरीय ब्राह्म्ण - पृ० - (15-9-4)
2. -वही- पृ० - 12
3. -वही- पृ० - 12

कला प्रतीक न होकर आदिम मनुष्य की श्रद्धा एवं नैतिक विश्वासों का प्रमाणिक गुण है" । "मालिनोवस्की" का मिथक सम्बन्धी अनुभव जंगली समाज के अध्ययन तक सीमित था । ‖1‖

इसी अध्ययन के आधार पर "वर्गसां" ने मिथक को "निम्न बौद्धिक यथार्थ" कहा था । ‖2‖

"एरिक डरडेल" ने भी माना था कि मिथक निम्न बौद्धिक यथार्थ है, किन्तु उसने स्पष्ट किया कि किसी - न - किसी स्तर पर उसका बौद्धिकता के साथ सहअस्तित्व बना रहता है, मिथक सत्य अथवा मिथ्या की तार्किक सीमा के बाहर है । उनका सम्बन्ध गहन आस्था से है । क्या दुर्खीम की "समनुरूप बौद्धिकता" और "लोगोस" की विजय के बाद मिथक ने अपना मूल्य खो दिया,? क्या वे जंगली समाज की चीज भर रह गये ? "वर्गसां" की भाँति "डरडेल" ने भी कहा कि बुद्धिवाद की जय यात्रा मनुष्य जीवन के लिए अशुभ है, उसके पास बुद्धिवाद का कोई विकल्प नहीं था, और न उसे इसकी ऐतिहासिक भूमिका का ही ज्ञान था । ‖3‖

आज जो विज्ञान है, उसी का पिछला रूप मिथक है, यह विज्ञान एक दिन में नहीं आ गया, और मिथक रचना का नया क्रम भी समाप्त नहीं हुआ, विज्ञान पहले भी था, मिथक आज भी बन रहे हैं । आधुनिक भाषा और समाज के बहुत सारे संकेत मिथकीय हैं । ‖4‖

"फ्रायड" और "कार्ल गुस्ताव युंग" ने क्रमशः स्वप्न, प्रतीक, और आधरूप ‖आर्केटाइप‖ के आधार पर मिथक की विवेचना प्रस्तुत की, उन्होंने कहा कि पूरी मानव जाति अचेतन के मिथकों के अधीन जीती है । और सांस लेती है, मिथक आधरूपों की अभिव्यक्ति है । ‖5‖

"क्लाइड् कलुखोन" ने मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तों के साथ सांस्कृतिक संरचनाओं पर विचार करते हुए स्पष्ट किया, कि मनुष्य का अहं ‖इगो‖ किस प्रकार मिथक का उपयोग एक सुरक्षात्मक कवच के रूप में करता है । ‖6‖

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ०- 13
2. -वही- पृ० - 13
3. -वही- पृ० - 13
4. -वही -पृ० - 14
5. -वही- पृ० - 14
6. -वही -पृ० - 14

स्वप्न और आकांक्षा की उदात्त अभिव्यक्ति से अलग "कार्ल-मार्क्स" ने मिथक को श्रम का एक रूप माना, उनका एक लेख है, "प्रमथ्यु" जिसमें उन्होंने अनवरत पीड़ा सहने के बावजूद जन जीवन के महान उद्देश्य के लिए यंत्रणा सहने वाले "प्रमुथ्य" की तारीफ की । आकांक्षा को प्रकृति का प्रवाह और स्वप्न को प्रकृति का - अतिरोहण सिद्ध करते हुए "रोजर गारोदी" ने लिखा, कि "श्रम" को मिथक यहाँ तक कि प्रकृति से विपरीत संस्कृति का ही आधार बनाने से हमें स्वप्न-प्रतीक मानव द्वारा अनवरत सृजन का ही एक रूप है । ऐसा रूप जो काव्यात्मक, पैगम्बराना तथा लड़ाकू हो, किन्तु हर हालत में पुरोदृष्टा हों । " ﴾1﴿

मिथक अतीत की घटनाओं से जुड़े होने पर भी वर्तमान के सामूहिक राष्ट्रीय जीवन के सन्दर्भ में नई अर्थवत्ता की तलाश करते हैं, राष्ट्रीयता आज की राजनीति का एक बड़ा मिथक है । मिथक की राजनैतिक आलोचना करते हुए - "जार्ज सोरेल" इसे मानवीय विपत्ति के क्षणों की भावात्मक उपज बतलाया । उसने "मार्क्स" की सर्वहारा क्रान्ति एवं दुनियाँ में मजदूरों की आम हड़ताल को मिथक घोषित किया, क्योंकि ये अंततः मनुष्य के वैचारिक विश्वासों के ही नये राजनैतिक स्वरूप हैं । ﴾2﴿

पश्चिम में यंत्र सभ्यता से ऊबकर राम-कृष्ण अथवा योग की तरफ बढ़ने की प्रवृत्ति है, या उत्तर औद्योगिक समाज की कल्पना भी पश्चिम के नये मिथकों द्वारा व्यक्त हो रही है, यूरोपीय जनता का एक हिस्सा पश्चिमी मिथक से पूर्वी मिथक में छलांग लगा रहा है । उनके मिथक मादक क्रिया अनुष्ठान में अधिक है । यंत्र मानव भी आधुनिक जीवन के मिथक हैं । आधुनिकतावादी जीवन में निराशा और पराजय की मानसिकता का कारण पूँजीवादी मिथकों का व्यापक प्रभाव है, खुले तौर पर जो बातें नहीं कही जा सकती, आदमी उन्हे मिथक में कहता है । इसी कारण उसने अतीत में अपनी सोच को मिथकों में व्यक्त किया । और आज भी कर रहा है । भूख लगने पर कोई कहता है, कि पेट में चूहे दौड़ रहे हैं, या आग लगी है, इस वाक्य संरचक का अर्थ निश्चय ही पूरे कथन में निहित है, क्यों कि सभी जानते हैं, कि पेट में आग लगने या चूहे दौड़ने की बात तार्किक नहीं है । फिर भी उक्त वाक्य संरचना में एक कथ्य है - बड़ी तेज भूख लगी है, इस तरह हर सांस्कृतिक मिथक का एक अर्थ होता है । ﴾3﴿

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 14
2. -वही- पृ०- 15
3. -वही- पृ०- 17

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में मिथक को नये-नये ढंग से विश्लेषित किया गया है, एक आधुनिक आलोचक "रोलांबार्थ" खेलकूद, फिल्म, राजपत्र, नारे, विज्ञापन, चुनाव, पत्रकारिता, इत्यादि में मिथकीय तत्वों की उपस्थिति बतलाकर संकेत विज्ञान के अंतर्गत मिथक के नये कार्यशील रूप की विवेचना करता है, उसकी दृष्टि में मिथकों की फैलती आधुनिक दुनियाँ की मूल बजह बुर्जुआ वर्ग का छद्मरूप है, यह वर्ग अपने प्रतिगामी चरित्र को छिपाने के लिए पूँजीवाद के मिथकीय रूपों को इस तरह प्रस्तुत करता है, कि वास्तविक रूप न दिखाई दे । (1)

पश्चिमी नव्य समीक्षा में भी मिथक का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना, इसे कथा वस्तु अथवा काव्यात्मक आयबिंब के रूप में विश्लेषित किया गया, अर्थात् साहित्यिक रूपों में मिथकीय गुण ढूंढ़ा गया, रोमांटिक युग ने मिथकों का उद्धार कर दिया था, किन्तु आधुनिकतावाद ने उन्हे भिन्न स्तर पर अपनाया, इसने मिथकों के साथ अनैतिहासिक रिश्ता कायम किया, और उनके अर्थ में धूसरता ला दी । (2)

"नार्थ्रप फ्राइ" ने मिथक को साहित्यिक सौन्दर्यात्मक संरचना से जोड़ा, स्वभावतः वह मिथक पर रूपवादी दृष्टिकोण से विचार करने लगा, कुछ ने उसे कच्चे माल के स्तर पर भी चुना, और बतलाया, कि कविता के स्तर पर मिथक की उपयोगिता इससे ज्यादा नहीं है । (3)

सामान्यतः पश्चिमी साहित्य जगत में मिथक की दो आधारों पर अधिक विश्लेषण हुआ, मनोविश्लेषणात्मक और सौन्दर्यबोधात्मक थोड़े से भारतीय विद्वानों ने भी इस पर काम किया, किन्तु इसके विषय क्षेत्र का सही रेखांकन नहीं हो पाने के कारण इसकी अन्तर्वस्तु की वास्तविक पहचान नहीं हो पायी, धर्म, आद्यरूप, संरचनावादी रूप, भाषा शास्त्रीय, स्वरूप, आदिम समाजों के मनो विज्ञान के भीतर ही मिथक को अलग-अलग परिसीमित कर दिया गया । (4)

मिथक की समग्र कार्यशील संरचना सामाजिक यथार्थ सामाजिक मनस्तत्त्व, जन-व्यवहार, भाषा, सौन्दर्य बोधात्मक अनुभव तथा मानवीय विश्वासों से अंतर-संबंधित है । (5)

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 19
2. -वही- पृ० - 20
3. -वही- पृ० - 20
4. -वही- पृ० - 20
5. -वही- पृ० - 20

हिन्दी के बहुत से आधुनिक कवि - उपन्यासकार अपनी भावात्मक प्रवृत्तियों के कारण मनो विश्लेषणवादी हो जाते, अगर उन्होंने मिथकों का इस्तेमाल नहीं किया होता, मिथक ने उन्हे एक वस्तुगत जमीन दी, और उन्हें - मानवतावादी बनाया, इन आधुनिक कवि उपन्यासकारों ने रूढ़ियों को त्यागकर मिथक के व्यापक संकेतों को अवधारणात्मक स्तर पर पहुँचाने की चेष्टा की, इस समूची प्रक्रिया में यथास्थितिवादी परम्परा से दो स्तरों पर प्रस्थान हुआ ।

1. प्रतीकात्मक मिथकीय कथा ।
2. सामान्य मिथकीय संकेत ।

किसी समूची मिथकीय कथा को आधार बनाकर प्रतीकात्मक स्तर पर मानवीय भावों की अभिव्यक्ति हुई, और कहीं पर मिथकीय संकेतों के जरिए बात कही गई । इन संकेतों की भूमिका आधुनिक कविता में बहुत अधिक थी, ज्यादातर छोटी-छोटी कविताओं में, आधुनिक जीवन की छोटी-छोटी अनुभूतियों को व्यक्त करने में सामान्य मिथकीय संकेतकों से बहुत सहायता पहुँची, इस प्रक्रिया में पुराने मिथक शास्त्र के स्थान पर आधुनिक मिथकों की रचना हुई, जो बदलते जन-जीवन से जुड़े थे । ﴾1﴿

"मुक्ति बोध" तक हिन्दी कविता की सशक्तम अभिव्यक्तियाँ मिथकों पर आधारित हैं, प्राचीन कवि अपनी कल्पना से जटिल, रूपकात्मक मिथकीय कथाओं की रचना करते थे, आधुनिक कवियों ने उन्हे प्रतीकात्मक और सांकेतिक स्तर दिया, उन्होंने मिथकों में आधुनिक मूल्यारोपण करके उन्हें जीवन की समकालीन धारा से जोड़ने का यत्न किया । ﴾2﴿

"रिचर्ड चेज" का कथन है कि अमरीका के कुछ आलोचक, समीक्षकों के मन में मिथक के प्रति इतना अधिक आकर्षण और उत्साह है, कि वे मिथक को एक प्रकार से साहित्य का पर्याय ही मानते हैं । "मिथक ही साहित्य है ।" ﴾3﴿

भारत में वैदिक या उसके परवर्ती युग का और उधर पश्चिम में यूनानी अथवा हीब्रू भाषा का कवि सर्जना के क्षणों में जिस प्रक्रिया से मिथक रचना करता था, मध्य युग तथा आधुनिक युग के कवि की सर्जनात्मक चेतना भी उसी का प्रयोग करती रही है, इस प्रकार केवल आदि युग के कवि ने ही, नहीं, वरन, प्रत्येक युग

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 24
2. -वही- पृ० - 24
3. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 30

के कवि ने अपने ढंग से मूलतः मिथक रचना ही की है, इसका अभिप्राय और स्पष्ट शब्दों में यह है, कि होमर ने "इलियड्" या "ओडेसी" में "वर्जिल" ने "ईनीड्" में "दाँते" ने "डिविनिआ-कॉमेडिया" "मिल्टन" ने "पैराडाइज लॉस्ट" "शैले" ने "प्रोमीथ्यिअस" "अनबाउंड" और "इलियट" ने "वेस्ट् लैंड" ने अपने-अपने देशकाल के रागात्मक उपकरणों और भाषिक साधनों के आधार पर एक प्रकार से मिथक - रचना ही की है । (1)

भारतीय परिदृश्य में देखें तो - वैदिक कवि के सून्कों में बाल्मीकि - व्यास के रामायण - महाभारत में कालिदास के "कुमार सम्भव" "तुलसीदास" के "राम चरित मानस" प्रसाद की "कामायनी" और "सुमित्रानंदन पंत" के "लोकायतन" में विभिन्न युगों के सामूहिक संस्कारों तथा भाषिक उपकरणों के अनुरूप प्रकारांतर से मिथक - सर्जना की एक निरन्तर परम्परा व्याप्त है । इन विचारकों के मत से आदिम मिथकों से लेकर आधुनिक काव्यों तक, संरचना की प्रविधि-प्रक्रिया में मूलवर्ती समानता है, अतः मिथक और काव्य में अभेद संबंध है । (2)

यह अवधारणा अतिवाद से ग्रस्त है, और "हैस्केल" "ब्लाक" फिलिपराव" आदि ने इस प्रकार के विचारकों को केवल मिथकवादी ही नहीं - मिथक के दिवानें दिवानें कहा है । "फिलिपराव" का एक विशेष विचारधारा द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद- से संबंध है, इसलिए उनकी प्रतिक्रिया कुछ अधिक उग्र हो सकती है । लेकिन "कैसिरेर" आदि गम्भीर चेता विशेषज्ञों के भी विवेचन से एक प्रकार की स्थापना का औचित्य सिद्ध नहीं होता, स्वयं "रिचर्ड चेज" को भी, जिन्होंने शुरू में यह आवाज उठाई थी, बाद में अपने मत का संशोधन करते हुए यह स्वीकार करना पड़ा कि " मिथक सम्पूर्ण साहित्य का नहीं, बल्कि एक विशेष प्रकार के साहित्य का पर्याय है ।" (3)

मनोविश्लेषण शास्त्र के अनुसार मिथक और साहित्य का जन्मजात संबंध है, "फ्रायड" ने दोनों को अपने तन-मन की प्रतीतियों का व्यक्त रूप माना है । "फिलिप व्हील राइट" के शब्दों में "मनुष्य की आदि भाषा काव्यमय रही है, और इसका कारण यह है कि वह एक ऐसी चेतना की सहज अभिव्यक्ति है, जिसे हम आधुनिक शब्दावली में मुख्यतः मिथकीय मानते हैं । संक्षेप में यह आदिम भाषा स्वभावतः लय और लक्षणा दोनों का प्रयोग करती है । (4)

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 31
2. -वही- पृ0- 34
3. मिथ रिविज़िटेड् -पार्टिजन रिव्यू - अंक - 17
4. ट्वंटि एथ सेंचुरी क्रिटिसिज्म - पृ0 - 257

.....46/-

विश्व का प्राचीन काव्य तो मिथक - प्रधान है, ही आधुनिक युग में भी अनेक कवियों ने मिथकों का प्रयोग किया है, अंग्रेजी में मिल्टन, शैलि, कीट्स, येट्स, इलियट, आदि और इधर हिन्दी में "प्रसाद", तथा "पंत" की कविता में मिथकों का प्राचुर्य मिलता है, लेकिन अन्तर यह है, कि प्राचीन मिथक जहाँ सामूहिक चेतना या अवचेतना की अभिव्यक्ति है, वहाँ आधुनिक कवियों के मिथक वैयक्तिक चेतना की सृष्टि है। आधुनिक युग में मिथक एक प्रकार से स्वप्न कथा §फैंटेंसी§ का रूप धारण कर लेता है, "स्वर्गीय मुक्ति बोध" ने "कामायनी" का स्वप्न कथा के रूप में इसी आधार पर विवेचन करने का प्रत्यन्न किया है । §1§

मिथक और कला अथवा साहित्य में आत्मपूरक तथा वस्तु परक सत्य का तादात्म्य रहता है - अर्थात् वस्तु - सत्य यहाँ अनिवार्यत: सत्य के रूप में अभिव्यक्त होता है । इस प्रकार दोनों में रागात्मक तत्व का प्राधान्य है । जिसके मूल में मानव की आदिम भावनायें अथवा प्राक्तन संस्कार विधमान रहते हैं । आदिम भावनाओं के इस संचित कोष के आधार पर साहित्य और मिथक दोनों ही मानव की समग्र चेतना अथवा समग्र मानव की चेतना को वाणी प्रदान करते हैं । इसी अर्थ में मिथक तथा साहित्य दोनों को लोक मानस की अभिव्यक्ति माना गया है ।§2§

मिथक के समान साहित्य भी चिरंतन सत्य और सामयिक सत्य का संगम - तीर्थ है - अर्थात् दोनो में युग-युग का सत्य युगीन सत्य के साथ एकात्मक होकर प्रकट होता है, और स्पष्ट शब्दों में मिथक और साहित्य दोनों ही मानव जीवन की सार्वभौम अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं । §3§

काव्य भाषा का साम्य भी एक सीमा के भीतर ही मान्य है, जहाँ तक आलंकारिक अथवा लाक्षणिक प्रयोगों का प्रश्न है, काव्य की भाषा का मिथक - भाषा से निश्चय ही घनिष्ठ सम्बन्ध है, किन्तु जहाँ सीधे अभिधा के द्वारा भाव - व्यंजना या रस - सृष्टि होती है, वहाँ मिथक - भाषा के प्रयोग का प्रश्न नहीं उठता । कुछ उदाहरण देखिए ।

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 35
2. -वही- पृ० - 35
3. -वही- पृ० - 35-36

......47/-

1. उषा सुनहले तीर बरसती,
जय लक्ष्मी - सी उदित हुई ।
उधर पराजित कालरात्रि भी
जल में अंतर्निहित हुई ।। ﴾1﴿

2. दिव साव सान का समय,
मेघ मय आसमान से उतर रही है -
वह संध्या - सुन्दरी परी-सी, धीरे-धीरे-धीरे । ﴾2﴿

उपर्युक्त अवतरणों में मिथक भाषा का प्रयोग स्पष्ट है । किन्तु --

संदेसौं देव की सों कहियो,
हौं तो धाय तिहारे सुत की माया करत ही रहियो ।
जदपि टेव तुम जानति उनकी तऊ मोहि कहि आवै,
प्रात होत मेरे लाल लड़ैते माखन रोटी भावै ।। ﴾3﴿

तथा

कागदु पै लखति न बनत, कहत सँदेस लजात ।
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात ।। ﴾4﴿

तथा

सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात ।
पर चोरी - चोरी गये, यही बड़ा आघात ।।
सखि, वे मुझ से कह कर जाते ।
कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ - बाधा ही पाते ? ﴾5﴿

आख्यान रूप होने के कारण मिथक का प्रबन्ध काव्य के साथ निश्चय ही घनिष्ठ सम्बन्ध है, भारत के तथा पश्चिम के प्रायः सभी प्रसिद्ध प्रबन्ध तथा आख्यान काव्यों की कथा वस्तु के मूल स्रोत्र प्राचीन मिथकों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मिल जाते हैं ।

होमर के दोनों महाकाव्यों "इलियड्" और "ओडेसी" के कथानकों का निर्माण पूर्ववर्ती मिथकों के आधार पर ही हुआ है । जो मौखिक परम्परा के प्रचलित थे । और जिनमें आदिम मानव - जाति की राग - द्वेष, प्रेम, कामुकता, वासना, ईर्ष्या, अहंकार, प्रतिशोध, भय, घृणा आदि वृत्तियाँ विविध रूपों में प्रतिफलित थी।

---

1. कामायनी - जय शंकर प्रसाद
2. परिमल - सुमित्रानंदन पंत / निराला
3. सूरसागर - सूरदास
4. सतसई - कवि बिहारी लाल
5. यशोधरा - मैथिली शरण गुप्त

भारतीय इंद्र - वृत्त युद्ध का कथानक देवासुर - संग्राम का रूप धारण कर अनेक प्रकार से परवर्ती काव्यों के कथानकों की सृष्टि करता है, विशेषज्ञों ने प्रकृति की सर्जन और विनाश लीलाओं के मिथक के रूप में भी इसका - आख्यान किया है । इसके अतिरिक्त देवताओं की अनेक प्रणय, कथाएँ सृष्टि के विकास, मनुष्य के जन्म - मरण प्रकृति की घटनाओं और विविध रूपों के कार्य कारण की व्याख्या प्रस्तुत करने वाली गाथाएँ ब्राह्मण - ग्रन्थों उपनिषदों, पुराणों आदि में होती हुई परवर्ती अभिजात काव्यों में अवतरित हुई है । (1)

प्रबन्ध - काव्यों के आधार - स्रोत्र रामायण, महा भारत और पुराणों में ये मिथकीय आख्यान ही है, "कुमार संभव" की कथा का आधार पुराणों से ग्रहण किया गया है, इसमें शिव - पार्वती का जन्मांतरगत प्रणय - संबंध और उसके फलस्वरूप पार्वती द्वारा गर्भधारण आदि अलौकिक प्रसंगों के साथ काम और रति का अत्यन्त रमणीय मिथक भी अनुस्यूत हैं । इस काव्य में एक ओर हिमालय के मानवीकरण और दूसरी ओर - "तारक बध" की योजना में देवासुर - संग्राम के मिथकों का उपयोग हुआ है । "रघुवंश" का मूल आख्यान रामायण तथा विष्णु पुराण से लिया गया है । जिसमें सूर्यवंश के राजाओं के अलौकिक कार्यों के साथ नंदिनी और सिंह की कथा के रूप में पृथ्वी - मिथक आदि का भी अत्यंत कौशल के साथ प्रयोग हुआ है । (2)

अंग्रेजी के रोमानी कवियों ने अपनी प्रगति-रचनाओं में भी मिथकों का प्रयोग किया है, "शैले" की "शोक - गीति" "एडोनिस" मिथकीय - प्रयोगों से भरी पड़ी है । "ओड टु दि वैस्ट विंड" जैसी लघुत्तर - रचना में भी मिथक प्रयोग स्पष्ट रूप से मिलता है । इसी प्रकार "कीट्स" की प्रसिद्ध प्रगीत कविताओं - "ओड टु दि ग्रीशियन अर्न" , "ओड टु - ऑटम", "ओड टु दि नाइटिंगेल " आदि में भी मिथकीय प्रयोग प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं । (3)

पाश्चात्य काव्य के अतिरिक्त भारतीय "मुक्तक काव्य" में मिथक का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है ।

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 45
2. -वही- पृ0 - 47
3. -वही- पृ0 - 56

उदाहरण के लिए :-

शंकरशिरसि निवेशित पदेति मा गर्वमुद्वहेन्दुकले ।
फलमेतस्य भविष्यति चण्डी चरण रेणु सृजा ।। (1)

हे चन्द्रकेले । शंकर के मस्तक पर स्थापित होने पर तुझे गर्व नहीं करना चाहिए, इसका फल यह होगा कि तुझे चंडी के चरणों की धूल धारण करनी होगी, पूर्वा पर प्रसंगों से मुक्त होने पर भी उपर्युक्त आर्या में शिव के साथ चंद्रकला और चंडी के सम्बन्ध को मिथक - कथा अंतर्व्याप्त है ।

डिगतु पानि डिगलातु गिरि में सब ब्रज बेहाल ।
कम्प किसोरी दरसु तें खरैं ल जाने लाल । (2)

यहाँ भी दोहे के छोटे - से कलेवर में एक पूरी मिथक कथा निहित है ।

छायावादी कवियों के प्रगीतों में अत्यन्त रमणीय मिथक स्थान - स्थान पर गुँथे हुए हैं ।

कहाँ मेघ औ हंस ? किन्तु तुम भेज चुके संदेश अजान ।
तुड़ा मरालों से मंदर धनु जुड़ा चुके तुम अगणित प्राण ।।

हे त्रिलोकजित् । नव-वसंत की विकच-पुष्प शोभा सुकमार,
सहम, तुम्हारे मृदुल करों में झुकी धनुष - सी है साभार ।
(पन्त - अंनग) (3)

निराला की प्रसिद्ध कविता "यमुना के प्रति" में भी अनेक मिथकों की ऐसी ही श्रृंखला मिलती है, इधर सम सामयिक युग में, नये कवियों की स्फुट रचनाओं में भी, कहीं अपने मूल रूप में और कहीं स्वप्न कथा के रूप में, मिथकों के बहुविध प्रयोग हुए हैं । नरेश मेहता की प्रगीत रचनाओं में ये प्रयोग अत्यंत प्रचुर मात्रा में मिलते हैं ।

" किरनमयी । तुम स्वर्ण वेश में, स्वर्ण देश में ।
सिंचित है केसर के जल से
इंद्र लोक की सीमा
आने दो सैन्धव घोड़ों का

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ0 नगेन्द्र - पृ0 - 56
2. बिहारी के दोह - बिहारी लाल
3. अनग - सुमित्रा नंदन पंत - पृ0 - 40

रथ कुछ हलके धीमा ।
पूषा के नभ के मंदिर में
वरूण देव को नींद आ रही,
आज अलक नंदा, किरणों की
वंशी का संगीत गा रही ।
अभी निशा का छन्द शेष है, अलसाये नभ के प्रदेश में । §1§

इस प्रकार मिथक का क्षेत्र काव्य में दूर-दूर तक फैला हुआ है ।

मिथक और पुराण :

इतिहास मिथक का विज्ञान है, मिथक इतिहास की संवेदना है, यह वस्तुतः जनता का भोगा हुआ ऐतिहासिक यथार्थ है । इतिहास का काम है, इस अर्थ को ढूँढना और उसे एक व्यवस्थित क्रम में रखना, इतिहास अतीत की स्थापना करता है । और मिथक इतिहास की गहरी समझ का दरवाजा है, आधुनिक चेतन इन मिथकों पर नयी रोशनी फेंकता है । समय के नये आयाम में खड़े मनुष्य चीजों से तथा इससे संबंध रखने वाली दुनियाँ को मिथक तरसाता है, सोच को नई भाषा देता है, और इस भाषा में मनुष्य अपनी एक अलग पहचान कायम करता है, सर्वाधिक जर्जरता - थकावट एवं संकट की घड़ी में मिथक ही मानवीय अभिव्यक्ति के सबसे बड़े सहायक रहे हैं । §2§

इतिहास हमें अपने काल के मनो विज्ञान जन आचरण, सामाजिक सौन्दर्यबोधात्मक अवधारणा और विश्वासों के भीतर अपनी जड़े फैलाकर ही धर्मतंत्र, राजतंत्र, सामंतवाद, पूँजीवाद, और साम्राज्यवाद अपनी राजनैतिकार्थिक व्यवस्था की जड़ों को मजबूत करता है, और इसमें ही मिथक के मूल्य पनपते और रूपान्तरित होते हैं, इसी लिए अगर हमें किसी जाति या संस्कृति का इतिहास जानना है, तो सबसे पहले हमें मिथक का अध्ययन करना जरूरी है, प्रागैतिहासिक काल में आदिम मनुष्य ने प्रकृति से अपने रिश्ते को पुरावृत्त में ही व्यक्त किया, था, सृजन एवं विध्वंस के मध्य प्राचीन मनुष्य की सैद्धांतिक जिज्ञासाएं काव्यात्मक थी, उसके आस-पास को घेरने वाली भौतिक परिस्थितियाँ - सूर्य, चंद्र, अग्नि, आँधी, जल, आदि उसके कौतुहल के प्रधान केन्द्र थे । उसने अपनी भाषा में जो अनुभव, व्यक्त किया था, वह मिथकीय था, इतिहास महानता का निरूपण नहीं, बल्कि संकट का बोध है, इतिहास का हर संकट मिथक में प्रतिबिंबित होता है।§3§

---

1. मिथक और साहित्य - डॉ० नगेन्द्र - पृ० - 57
2. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ० शम्भूनाथ चतुर्वेदी - पृ० - 34
3. -वही- पृ० - 34 - 35

इतिहास के नाम पर जनश्रुतियों के आत्मनिष्ठ रूप तथा अतिकाल्पनिक कथाएँ ज्यादा हैं, इतिहास की शक्तियों की पहचान ईश्वर की शक्ति के रूप में हुई है, अपने बारे में "गीता" में कृष्ण ने कहा कि गुजरा अतीत, उगता वर्तमान, और आने वाला भविष्य सब उनके भीतर है, वे एक सम्पूर्ण इतिहास हैं, इस तरह उन्होंने इतना तो बतलाया कि सृष्टि का व्यापार एक नियम के अधीन है, किन्तु वह नियम भौतिक न होकर आध्यात्मिक है ।

" होइहें वही राम रूचि राखा" की विचार - धारा ने इतिहास की निर्माणकारी शक्तियाँ ईश्वर के अधीन कर दी ।

" राम विलास शर्मा ने लिखा है - भारत जैसे देश में प्राचीन इतिहास के प्रति अभिरूचि होना स्वाभाविक बात है, किन्तु इस देश में, पौराणिक दृष्टि - कोण इतना प्रभावशाली रहा है, कि इतिहास के प्रति - वैज्ञानिक दृष्टि कम इस पौराणिक दृष्टि का परिचय ही अधिक मिलता है, जो लोग पुराणों के विरोधी है, वे भी एक प्रकार की पौराणिक दृष्टि हटाकर उसकी जगह दूसरे प्रकार की पौराणिक दृष्टि प्रतिष्ठित करते हैं । (1)

मिथक को "पुराकथा" पुराण कथा" या "देवकथा" कहते हैं, यह मात्र कल्पना ही नहीं बल्कि लोकानुभूति से संश्लिष्ट ऐसी कथा होती हैं, जो अलौकिकता का संकेत भी देती है । " (2)

मिथक का रूप कथात्मक होता है, मिथक का मूल - सम्बन्ध देव विधा से है । "भारतीय मिथक संसार के बेजोड़ स्थान रखते हैं × × × पुराणों का नाम इतिहास पुराण जैसे समस्तपद में वेदों में आया है । × × × अनेक पौराणिक कथायें भी वेदों में आयी है, जिनको मिथक कहा जा सकता है । " (3)

ऋग्वेद में बार-बार जिस देवासुर संग्राम की कथा आई है, वह कभी ऐतिहासिक सत्य रहा होगा, जो मौखिक परम्परा में आगे चलकर एक पौराणिक मिथक बना, वस्तुतः "भावों की गहनता की अभिव्यक्ति के लिए भाषा अशक्त माध्यम है, इस असमर्थता को बिम्बों व प्रतीकों के माध्यम से दूर किया जा सकता है, अतः मिथक कथायें दर्शन, शक्ति, अध्यात्म आदि के क्षेत्र में प्रतीक व बिम्ब का कार्य करती रहती है । (4)

---

1. मिथक और आधुनिक कविता - डॉ0 शम्भुनाथ चतुर्वेदी - पृ0- 36
2. मिथक उद्भव और विकास तथा हिन्दी साहित्य - डॉ0 उषापुरी विद्यवाच - स्पति - पृ0 - 20
3. मिथक और भाषा - प्रो0 कन्हैया लाल लोढ़ा - पृ0 - 25
4. मिथक उद्भव और विकास - डॉ0 उषापुरी विधावा चस्पति -पृ0-15

मिथक में किसी देवी - देवता का वृत्त अवश्य जुड़ा रहता है, मिथक से भारत का धर्म गाथा शब्द भी जुड़ा हुआ है । मिथक का एक समतुल्य कथा रूप लोक गाथा या लोक कथा का है । ﴾1﴿

मिथक मनुष्य के पूर्वजों की जीवन-यात्रा की गाथा है, मैरीलीच का कहना है कि मिथक वह कथा है, जो किसी युग में घटी हुई हो, इन कथाओं में अनेक देश के धार्मिक विश्वास प्राचीन काल के वीरों, देवी - देवताओं, जनता की अलौकिक तथा अद्भूत परम्पराओं तथा सृष्टि रचना का वर्णन होता है । ﴾2﴿

" एक दशक की खोज के उपरान्त लन्दन युनिवर्सिटी के "डॉ0 पामेल एल0 राबिन" तथा "कलकत्ता के इंडियन स्टेटिस्टिकल इंन्सिटिच्यूट के "जियोलोजिकल स्टडीज यूनिट" की खोज के अनुसार - "यूरोप" और "अमरीका" में पाये गये जीवाश्मों की समानता इस तथ्य को सिद्ध करती है, कि आज से ﴾सात﴿ करोड़ वर्ष पूर्व सब महाद्वीप से जुड़े हुए थे, तथा जिन मिथक घटनाओं को कपोल कल्पित कहा जाता है । वे करोड़ो वर्षों पूर्व कुछ लोगों ने एक साथ झेली होगी, उदाहरण के लिए प्रलय, प्रलय के उपरान्त पुनः सृष्टि की रचना आदि जिनका अंकन प्रायः सभी देशों के साहित्य में लग-भग एक ही प्रकार से किया गया है, धीरे-धीरे महाद्वीपों की भौगोलिक " विलगता के साथ-साथ उनकी प्राकृतिक परिस्थितियों से समझौता करते हुए सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन, आदि सभी कुछ अलग होता गया, मिथकों का स्वरूप बदलता गया, और ई0 1956 में "हस्तिनापुर" की खुदाई से निकले पांडवों के पांचवें वंशज "मिचक्षु" के युग के खन्डहर नहीं मिले । इन खन्डहरों ने पुराणों में अंकित "हस्तिनापुर" पर टिड़िडया के आक्रमण तथा "गंगा में आयी बाढ़ को सिद्ध कर दिखाया ।" ﴾3﴿

मिथकों के निर्माण में इतिहास, पुराण, की घटनाओं, पात्रों एवं लोक - कथाओं का पूरा हाथ है ।

मिथक के विषय में अश्विनी पाराशर का कहना है, कि "वास्तव में यह रचनाकार की कल्पना का वह मूर्त रूप है, जो उसके व्यापक क्षेत्र को व्यक्त करने के लिए अतीत के उपकरण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो, जिसके लिए किसी पुराकथा,

---

1. मिथक और भाषा - प्रो0 कन्हैया लाल लोढ़ा - पृ0 - 27
2. डिक्शनरी ऑव फोकलोर - मेरी लीच, द्वितीय अंक - पृ0 - 778
3. भारतीय पुरा - साहित्य - कोष - प्रथम संस्करण - 1 से 7 तक

घटना, चरित्र या विचार का आधार लिया गया हो । यह कोई ऐसी कथा या आख्यान नहीं जो एक दिन में बन जाता हो, बल्कि यह तो मानव की आस्थाओं, भावनाओं, विश्वासों का ऐसा संयोजन है, जो इतिहास या काल के प्रवाह में शनैः शनैः रूप ग्रहण करता हुआ समस्त मानव - समाज की चेतना को प्रभावित करता है । (1)

अज्ञेय के अनुसार मिथक की उपयोगिता केवल इस बात में मानना कि वह पुरातन और आधुनातन में एक सतत् समान्तरता दिखाते चलने का साधन है, या कि समकालीन इतिहास की अराजकता - व्यर्थता को नियंत्रित, अनुशासित रूप में प्रस्तुत करने में सहायक होता है, मिथक को गलत समझना हो न हो अधुनातन इतिहास के साथ गलत नाता जोड़ना है । (2)

समय के प्रवाह में जब मूर्त घटना अमूर्त प्रतीक बन जाती है तब उसे मिथ या मिथक कहा जाता है । मिथ ऐतिहासिक, पौराणिक एवं धार्मिक भी होते हैं । बैवस्टर कोश में मिथ की परिभाषा इस प्रकार दी गई है, ऐतिहासिक, पौराणिक गाथा जो मानव प्रकृति, प्राकृतिक निष्कर्षों, मानव के उदय, व्यवहार, परम्परा आदि को व्यक्त करती है, वह मिथ है । एक उद्धरण द्रष्टव्य है -

जब जगत को चाहिए फुलवारियाँ
हो रही तब युद्ध की तैयारियाँ
फिर धरा सीता सतायी जा रही
फिर असुर संस्कृति समायी जा रही ।(3)

धार्मिक एवं पौराणिक कथा के आधार पर जिन सन्दर्भों एवं पात्रों की काव्य में अभिव्यक्ति दी जाती है वह सामान्य साहित्यिक अभिव्यक्ति की अपेक्षा सौन्दर्योद्घाटन में अधिक प्रभावी और सक्षम होता है । मिथक बिम्ब एवं प्रतीक में मूलतः निहित होता है, अज्ञेय के शब्दों में प्रतीक के मूल में मिथक होता है, पर प्रतीक में जान डालने के लिए नया मिथक हम गढ़ नहीं सकते । (4)

आज का कवि मानव मूल्यों और जीवन के सत्यों को पौराणिक मिथ द्वारा नवीन आयाम देता है, उसे नये सन्दर्भों में उद्घाटित करता है ।

---

1. समकालीन कविता में मिथक - डॉ० अश्विनी पाराशर, पृ०- 46 समकालीन हिन्दी कविता संवाद, सं.- डॉ० विनय अश्विनी पाराशर ।
2. भवन्ती - डॉ० अज्ञेय - पृ० - 97
3. सूर्य का स्वागत - दुष्यन्त कुमार - पृ० - 11
4. धूप के धान - गिरिजा कुमार माथुर - पृ०- 92

कारावासी वसुदेव आज का पराश्रित, असहाय, जीवन की मजबूरियाँ और विवशताओं की कारा में जकड़ा हुआ आदमी अपनी आत्मज सर्जना रूपी शिशु को स्वयं ही अपने हाथों से दूर नन्दग्राम में लाकर छोड़ देता है। इस मिथक के माध्यम से कृष्ण युगीन परिस्थितियों का नवीन अर्थोन्मेष परिलक्षित होता है। इस मिथक के द्वारा कवि ने तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक विसंगतियों को उजागर करने का प्रयास किया है । "सूर्य का स्वागत कविता में दुष्यन्त कुमार ने क्वांरी, गर्भवती का असामाजिक गर्भ जो कि बाहर आने की तड़पन में है और जो स्थिति क्वांरि कुन्ती की गर्भवती स्थिति में थी वही अभिव्यक्ति कुन्ठा की भी है । एक उद्धरण द्रष्टव्य है :-

मेरी कुंठा
रेशम की मीड़े से ताने बाने बुनती
स्वर में, शब्दों से, भावों से
और वाणी से कहती सुनती
तड़प-तड़प कर बाहर आने को
सिर धुनती, गर्भवती है
मेरी कुंठा क्वांरी कुन्ती । (1)

संसार में जब फुलवारियां चाहिए, आनन्द चाहिए, उस समय विश्व युद्धरत है, इस प्रकार गिरिजा कुमार माथुर ने "सीता" शब्द के प्रयोग से वही बिम्ब उपस्थित किया है, जो पौराणिक आख्यान में सीता के उदाहरण, पीड़ा, आदि में व्यंजित है । इसी प्रकार अज्ञेय ने भी नारियों की असहाय, पीड़ित, और निर्बल रूप में द्रौपदी को मिथक का सहारा लेकर चित्रित किया है । एक उदाहरण देखें :-

द्रौपदी सी चीखती है
नारियां निर्वस्त्र
जिनके चीर दुःशासन कहीं पर
फेंक आया खींच कर । (2)

इसी प्रकार गिरिजा कुमार माथुर ने ऐतिहासिक चित्र प्रस्तुत किये हैं ।

एशिया के कमल पर तुम भारती सी ।
पूर्व के जन - जागरण की आरती सी । (3)

---

1. दूसरा सप्तक - डॉ० अज्ञेय - पृ० - 71
2. धूप के धान - गिरिजा कुमार माथुर - पृ०-1
3. शिला पंख चमकीले - गिरिजा कुमार माथुर - पृ०- 6

आदम का पुत्र बहुत भटका अँधेरो में ।
चंगेजी न्यायों के खून भरे घेरों में ।

कवि ने मिथक के माध्यम से अन्याय और बर्बरता को स्पष्ट किया है । ͦ1ͦ

महा भारत कालीन पान्डवों के मिथ द्वारा आज की परिस्थितियों से घिरे व्यक्ति के टूटने के भाव एवं जीवन की वास्तविकताओं के निषेध को व्यंजित किया गया है । सपनों का लाक्षागृह, मोम की दीवारें , जगत के यथार्थ से जल जायेंगी । अर्थात् बाह्य जगत की कटुताओं से कवि बचना चाहता है । ͦ2ͦ

नयी कविता में मिथकों के माध्यम से मूल्यहीनता, खन्डित - आस्था, संकीर्ण बोध तथा दैनन्दिन यथार्थ को उभारा गया है । एक उद्वरण दृष्टव्य है :-

तुम यशोधरा से भी बड़ी हो ।
और मेरा महा भिनेष्क्रमण ।
जो मिल की सायरेन के साथ मुंह अँधेरे ही हो जाता है ।
और तथागत-सा । जो मैं ओवर-टाइम करके आधी रात,
वापस आता हूँ, ठन्डे चूल्हे और साफ चौके को देख,।
तुम्हारी वीतराग स्थिति पर मन ही मन । उपदेश देता हूँ । ͦ3ͦ

बालकृष्ण राव के "एक बेकार आदमी से" शीर्षक सानेट में मिथकों का सशक्त प्रयोग हुआ है । साठोत्तरी मिथक कविताओं कवियों ने अधिकतर लाल रवि, यन्त्रगरूण तथा सांप, सूरज और सागर, सागर फेन, रोटी, लाल निशान, उषा-सूर्योदय, मौन, अक्षयवट, वृहद्कुम्भ, वृहद्पर्व, सागर और नाव । ͦ4ͦ

प्रज्वलित कमल, शक्ति पुरूष, ब्रह्मराक्षस, ओरांग, उटांग, जनतंत्री वानर, लकड़ी का रावण, टेढ़ा मुंह चांद, धून्धू, डूबता चांद, राक्षस बालक, वसुदेव महाकंस, पन्नादाई, शिवाजी, तुलसीदास, दन्डकन्वन, लंकापुराना मकान, उदासी से पुती गायें, अर्जुन, इड़ा-पिंगला-सुषुम्ना-कुण्डलिनी-कमलिनी, माँ । ͦ5ͦ

धूम । ͦ6ͦ

---

1. दूसरा सप्तक - नरेश मेहता - पृ0 - 126
2. आभार कथा - एक कन्ठ विषपायी - पृ0 - 2
3. अतुकान्त - सं. जगदीश गुप्त - पृ0 - 18-113
4. सीढ़ियों पर धूप - रघुवीर सहाय - पृ0 - 168
5. आधुनिक कवि भाग - 13 बालकृष्ण राव - पृ0- 95
6. "वही" - पृ0 - 108ए

......56/-

पांचाली । (1)

गूँगे - पद - चिन्ह । (2)

टूटा पहिया - चक्रव्यूह, अभिमन्यु, वट पत्र, बैसाखियां, गांडीव, जुए का पांसा, वर्फीली शिखर, बाँझ, काम धेनुएं, कुद्ध वृषभ, लाक्षागृह, वियुर, सुरंग, अर्द्ध भस्म - देव दारू, अग्नि कमल । (3)

एक लव्य साध, ऊसर भूमि, अर्धविराम, भेंड, चूहा, टूटे पहिए, दबा हुआ हाथ, जली हुई मुट्ठियाँ, कटे हुए अंगूठे । (4)

चमकीली शिलाएँ, क्रानिक मरीज, मकड़ी का जाल, महा मेघ, चाँदनी, धूम, सूरज का पहिया तथा सूरज के चक्र । (5)

पहिया पंख । (6)

इसके अतिरिक्त कवियों ने शिखन्डी, द्रौपदी, गान्धारी, युधिष्ठिर, एकलव्य, अश्वत्थामा, द्रोणाचार्य, संजय, आदम हव्वा, क्रौंच, बाल्मीकि, सावित्री, शबरी, जैसे मिथकों द्वारा सौन्दर्य की व्यंजना की है । इतना ही नहीं अधकचरे लोगों, शोषित मजदूरों, किसानों, श्रमजीवी क्लर्कों, वर्तमान युग की विडम्बना तथा आज की मजबूरियों से घिरे व्यक्ति की टूटन को मिथकीय काव्य के द्वारा महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति देने का भरसक प्रयास किया है । जो साठोत्तरी काल की मिथकीय काव्यों की उपलब्धि माना गया है ।

आधुनिक काव्य चेतना में पौराणिक आख्यानों की साभिप्राय सन्निहित कविता में एक सार्थक उद्देश्य को सामने रखने में सक्षम रहा है । साठोत्तरी कवियों ने ऐतिहासिक एवं पौरानिक पात्रों के मानसिक द्वन्द्वों उनका व्यथाकथाओं को आधुनिक संदर्भों में स्थापित करके पाठक सामान्य की सहज संवेदनाओं को उभारा है ।

---

1. सात गीत वर्ष - धर्मवीर भारती - पृ0 - 60,79
2. कनुप्रिया - धर्मवीर भारती - पृ0 - 75
3. मछली पर - विजय नारायण साही - पृ0 - क्रमशः 28 से 114
4. परिवेश, हमतुम - कुंवर नारायण - पृ0 - 94
5. चक्रव्यूह - पृ0 - 103,127
6. नयी कविता - अंक-2 पृ0- 67,92 सं.जगदीश गुप्त

इससे दो लाभ प्रत्यक्ष होते हैं -- एक तो विस्मृत पौराणिक आख्यानों का पुनर्वाचन होता है जिससे नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत को जानने में समर्थ हो सकी है और भारतीय संस्कारों का नवीकरण भी हो सका है । दूसरे पौराणिक पात्रों के व्यक्तित्व उनके, मनोमंथन, उनके आत्म संघर्ष के द्वारा युगीन परिवेश को बड़े ही सार्थक संदर्भों में सम्प्रेषित किया गया है जो पाठक वर्ग के गले आसानी से उतर जाता है ।

अंत में कहा जा सकता है कि साठोत्तर कविता की अपनी एक विशिष्ट पहचान इन पौराणिक आख्यानक कविताओं के माध्यम से उभरा है जिसमें अनेक समर्थ कवियों ने अपना विशिष्ट प्रतिभा योगदान दिया है ।